हम और हमारा माहौल

भाग-2

पाठ्य्-पुस्तक लेखन
एवं
सम्पादन समिति

विषय-सूची

“हम और हमारा माहौल, भाग-2” के सम्बन्ध में

प्रारम्भिक कक्षाओं में अब सामाजिक ज्ञान और विज्ञान को एक साथ परिवेश अध्ययन के अन्तर्गत पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इस पाठ्यक्रम में इस बात का प्रयास किया गया है कि बच्चों को उनके आस-पास के माहौल से इस प्रकार अवगत कराया जाए कि वे अपने चारों ओर के प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण से भली-भाँति परिचित हो जाएँ।

मरहूम अफ़ज़ल हुसैन साहब की पुस्तक सामान्य ज्ञान की तरह ही नए सिरे से एक सेट तैयार किया जा रहा है जिसके द्वारा छात्र-छात्राओं को आधुनिकतम ज्ञान प्रदान किया जा रहा है। इसी क्रम को अब “हम और हमारा माहौल” के नाम से इनशा-अल्लाह प्रकाशित किया जाएगा। इस कार्य में जिन विद्वानों का भी सहयोग रहा है हम उनके आभारी हैं।

यह पुस्तक उर्दु पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है। इसी तरह मैं इस्लामी साहित्य ट्रस्ट के सभी साथियों का आभारी हूँ जिन्होंने इसे हिन्दी में प्रकाशन योग्य बनाने में पूरा सहयोग दिया। इन साथियों में श्री नसीम ग़ाज़ी फ़लाही (सेक्रेट्री), श्री कौसर लईक़, श्री ख़ालिद निज़ामी और मुहम्मद अली शाह शुऐब प्रमुख हैं।

—मुहम्मद अशफ़ाक़ अहमद
निगराँ (निरीक्षक)

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

(अल्लाह अत्यन्त दयावान और कृपाशील के नाम से)

दो शब्द

अल्लाह तआला ने हमें एक सुडौल शरीर प्रदान किया है। इसके अन्दर विभिन्न प्रकार की शक्तियाँ और सामर्थ्य सन्निहित कर दी हैं। हमारे शरीर के अस्तित्व और विकास के लिए हमारे पैदा करनेवाले ही के द्वारा निर्धारित कुछ सिद्धान्त और नियम हैं जिनकी अवहेलना हमारे अस्तित्व के लिए घातक है। अतः अपने शरीर के ढाँचे, अंगों के क्रिया-कलाप, अस्तित्व के स्थायित्त्व और शक्तियों तथा योग्यताओं की वृद्धि से पूर्णरूपेण परिचित होना आवश्यक है ताकि अपने जीवन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम अपने शरीर से पूरा-पूरा लाभ उठा सकें।

हमने एक विशेष प्रकार के समाज में जन्म लिया है। हमारा समाज एक विशेष स्वरूप रखता है। इसके विभिन्न तत्व हमारे जीवन को प्रभावित करते रहते हैं। हमारे व्यक्तित्व का बनना-बिगड़ना और हमारे चरित्र का निर्माण बहुत कुछ हमारे माहौल पर निर्भर है। हमारी रुचि और रुझान, हमारे विचार और चिन्तन तथा हमारी मानसिकता भी एक सीमा तक समाज ही के विभिन्न क्रिया-कलापों के परिणाम हैं।

हम स्वभाव से ही सामाजिक हैं। अकेले नहीं रह सकते। एक समाज में रहकर जीने के लिए बाध्य हैं। अतः समाज के स्वरूप, उसके विभिन्न तत्व और क्रिया-कलाप और चरित्र व आचरण पर उनके प्रभाव और उन नियमों का ज्ञान हमारे लिए आवश्यक है जिनके आधार पर हमारे समाज का निर्माण हुआ है।

सृष्टिकर्ता ने अपने विश्व को विभिन्न वस्तुओं से सजाया है। उसने हमें पैदा करके धरती पर अपने प्रतिनिधि का पद प्रदान किया है। विश्व की सारी वस्तुएँ और प्रकृति की विभिन्न छटाएँ किसी न किसी स्तर पर हमारे ही पद की

परिपूर्णता में सहायक एवं सहयोगी बनते हैं। कुछ तो प्रत्यक्ष रूप से और कुछ परोक्ष रूप से। अतः उनके सम्बन्ध में आवश्यक ज्ञान और उनके उपयोग की विधि का जानना भी ज़रूरी है। इन विषयों पर तकनीक के आधार पर प्रकाश डालनेवाली पुस्तकों की कमी नहीं है, किन्तु उन लेखकों की मानसिकता का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि वे जाने-अनजाने संसार को बग़ैर ख़ुदा के मानकर इन विषयों पर लिखने बैठते हैं। अतः उनकी कृतियाँ अपने हानिकारक प्रभाव के कारण छात्रों के लिए उचित नहीं हैं। इन्हीं कारणों से हमने सामाजिक ज्ञान की पुस्तकों का यह क्रम आरम्भ किया है। आशा है कि यह सेट छात्रों के लिए उपयोगी और मनोरंजक सिद्ध होगा।

शिक्षकों से निवेदन है कि वे यथासम्भव बालकों को अवलोकन और प्रयोग करने का अवसर प्रदान करें। जिज्ञासा एक स्वभाव है। बचपन में यह अपनी पराकाष्ठा पर होती है। आँखें खोलने के बाद ही से बच्चे अपने माहौल की वस्तुओं और दृश्यों पर जिज्ञासापूर्ण दृष्टि डालते हैं और साक्षात प्रश्न-चिह्न बन जाते हैं। इस विषय से उन्हें स्वाभाविक लगाव होता है। परन्तु उन जिज्ञासाओं की पूर्ति कानों से अधिक आँखों से होती है। आप छात्रों के सामने भाषण कम से कम दें। उन्हें स्वयं प्रयोग और अवलोकन द्वारा समझने में सहायता करें। आरम्भिक कक्षाओं में पुस्तक पर अधिक निर्भर न रहें क्योंकि छात्रों का ध्यान शब्दों की ओर रहता है, अर्थ और आशय की ओर उनका ध्यान नहीं जाता। एक पाठ अच्छी तरह समझा देने के बाद पुस्तक से पढ़ने के लिए कहें।

ख़ुदा हमें हमारे मक़सद में कामयाब करे।

— अफ़ज़ल हुसैन

पाठ - 1

ये हैं अनमोल रत्न

अल्लाह तआला कितना अच्छा है। उसने हमें इनसान बनाया। तन्दुरुस्त और ताक़तवर शरीर दिया। शरीर के बहुत से अंग हैं। हर अंग बड़े काम का है।

अल्लाह ने हमें दो हाथ दिए। हाथों में पाँच-पाँच उंगलियाँ दीं। उंगलियों में तीन-तीन पोर हैं, जिनसे हम उँगलियों को मोड़ सकते हैं। हाथों को कुहनी और कलाई की जगह से भी मोड़ सकते हैं। ज़रा सोचो तो अगर हाथ इन जगहों से न मुड़ सकते तो क्या हम इनसे काम ले सकते थे? इसलिए हमें हर समय अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए।

हाथों से हम तरह-तरह के काम लेते हैं। खाते हैं, पीते हैं, लिखते हैं, गेंद फेंकते हैं, चीज़ को पकड़ते हैं, और भी बहुत-से दूसरे काम करते हैं।

अल्लाह ने हमें दो टाँगें दीं। टाँगों को हम घुटनों और टख़नों से मोड़ सकते हैं। अगर टाँगें इन जगहों से न मुड़तीं तो न हम चल सकते थे और न बैठ ही सकते थे। पैरों से हम चलते हैं, खेलते हैं, साइकिल चलाते हैं, दौड़ते हैं और मस्जिद जाते हैं।



अल्लाह ने हमें दो आँखें दीं जिनसे हम चीज़ों को देखते और पहचानते हैं। अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ते हैं और देख-भालकर रास्ता चलते हैं। रंग-बिरंगी और सुन्दर चीज़ों को देखकर ख़ुश होते हैं। जब हम दुखी होते हैं तो आँखों से आँसू बह निकलते हैं। जब इनसान बहुत अधिक ग़ुस्से में होता है तो यही आँखें अंगारे जैसी लाल हो जाती हैं।



अल्लाह ने हमें ज़बान दी और नाक भी। बहुत-सी चीज़ों को हम केवल देखकर नहीं पहचान सकते। हाँ, चखकर या सूँघकर बता सकते हैं। चीनी और नमक के चूर्ण को केवल देखकर पहचानना कठिन हो जाता है, मगर ज़बान पर रखते ही हम जान जाते हैं कि यह नमक है या चीनी। इसी तरह बहुत-सी खट्टी, मीठी, नमकीन और कड़वी चीज़ों का स्वाद हम ज़बान से चखकर पता लगाते हैं।

हम रंग-बिरंगी चीज़ों को देखकर ख़ुश होते हैं और ख़ुश्बूदार चीज़ को सूँघकर भी दिमाग़ को सुकून मिलता है। गन्दी और बदबूवाली जगह से नाक बन्द करके गुज़र जाते हैं।

अल्लाह ने हमें दो कान दिए सुनने के लिए। हम बिना देखे ही बता सकते हैं कि आवाज़ किस तरफ़ से आ रही है। किस चीज़ की आवाज़ है। रोने की है या हँसने की, आदमी की है या जानवर की। आवाज़ सुनकर ही हम होशियार और चौकन्ना हो जाते हैं। कोई गाड़ी आ रही हो तो उसकी आवाज़ सुनकर हम सड़क के किनारे हो जाते हैं।

अल्लाह का बड़ा एहसान है कि उसने हमें सभी आवश्यक अंग दिए। ये अंग अनमोल रत्न हैं। हमें अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए। शरीर के इन सभी भागों की रक्षा करके उनसे ठीक ढंग से काम लेना चाहिए।

शरीर के ये अंग तो सभी मनुष्यों के पास हैं। परन्तु सभी मनुष्य देखने में एक जैसे नहीं लगते। क्या तुम बता सकते हो कि ऐसा क्यों है? वास्तव में

प्रत्येक मनुष्य के अंगों की बनावट अलग-अलग प्रकार की है। तुम अपने पाँच साथियों को ध्यान से देखो और बताओ कि :

1. क्या उनकी आँखें, नाक और कान एक प्रकार के हैं?

2. क्या उनके चमड़े का रंग बिल्कुल एक जैसा है? अगर नहीं तो क्या अन्तर है?

3. उनकी आँखों का रंग कैसा है?

4. क्या उनके बालों का रंग एक जैसा है? अगर नहीं तो उनमें क्या अन्तर है?

अपने साथियों के अंगों के देखने के बाद तुम किस नतीजे पर पहुँचे?

वास्तव में सभी मनुष्यों के अंगों की बनावट एक जैसी नहीं है; बल्कि अलग-अलग प्रकार की है। यह भी अल्लाह की कृपा है, नहीं तो तुम लोगों को पहचान नहीं पाते। तनिक सोचो कि अगर तुम्हारे दो मित्र बिल्कुल एक तरह के होते तो क्या होता?

अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो–

1. शरीर के उन अंगों के नाम बताओ जो दो-दो हैं।
2. हाथ और पैर के दो-दो काम बताओ।
3. सुनने और सूँघने के लिए हम कौन-कौन से अंगों का प्रयोग करते हैं?
4. जीभ हमारे किस-किस काम आती है?
5. आँख, नाक, कान जैसे अंग सभी मनुष्यों के पास हैं फिर भी देखने में एक जैसे नहीं लगते हैं, क्यों?

लिखित

1. अंगों के नाम को उनके ठीक कार्यों से मिलाओ—

आँख	सूँघने के लिए
जीभ	चलने-फिरने और खेलने के लिए
पैर	चखने और बोलने के लिए
नाक	सुनने के लिए
कान	देखने के लिए

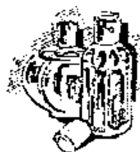
2. अंगों के चित्रों से उनके कार्य को जोड़ो—















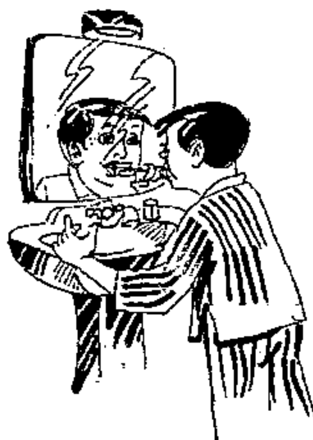


पाठ - 2

दिन और रात

(कैसे गुज़रता है मेरा समय)

मेरा नाम अब्दुल्लाह है। मेरी उम्र आठ वर्ष है। मैं कक्षा 3 में पढ़ता हूँ। फ़ज्र की नमाज़ के समय मुझे पिताजी जगा देते हैं। कभी-कभी मैं ख़ुद भी जाग जाता हूँ। सबसे पहले बड़ों को सलाम करता हूँ। शौच आदि ज़रूरी कामों से निपटने के बाद साबुन से अच्छी तरह हाथ धोता हूँ। ब्रश से दाँतों को साफ़ करने के बाद वुज़ू करता हूँ और फिर नमाज़ पढ़ता हूँ। नमाज़ के बाद क़ुरआन की तिलावत करता हूँ। क़ुरआन अल्लाह की किताब है, इसे ज़रूर पढ़ना चाहिए।



दोपहर को और रात के खाने के बाद भी ब्रश करता हूँ। दाँत मज़बूत और साफ़ रहें इसके लिए ब्रश करना ज़रूरी है। प्यारे नबी (सल्ल॰) ने भी मिसवाक (दातुन) करने की ताकीद की है।

व्यायाम करने के कुछ देर बाद ग़ुस्ल करता हूँ। व्यायाम करने से आदमी तन्दुरुस्त रहता है और ग़ुस्ल करने से साफ़-सुथरा हो जाता है। इसी लिए मैं

रोज़ाना ग़ुस्ल करता हूँ। "सफ़ाई आधा ईमान है।" यह अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) का कहना है। ग़ुस्ल करते समय अच्छी तरह कुल्ली करता हूँ और नाक में पानी डालता हूँ, ग़ुस्ल में ऐसा करना ज़रूरी है।

ग़ुस्ल करने के बाद नाश्ता करता हूँ। इसके बाद बैग को अच्छी तरह देख-भाल लेता हूँ कि इसमें सारी किताबें, पेंसिल और कॉपियाँ हैं या नहीं। स्कूल जाने से पहले बैग चेक करने का काम मैं रोज़ाना करता हूँ, क्योंकि इनमें से अगर कोई चीज़ भी छूट जाती है तो टीचर नाराज़ होते हैं और मेरी पढ़ाई का भी नुक़सान होता है। स्कूल भी मैं रोज़ाना समय पर पहुँचता हूँ, देर कभी नहीं करता।

स्कूल से लौटकर हाथ-मुँह अच्छी तरह धो लेता हूँ। कुछ नाश्ता करता हूँ। खाने से पहले बिस्मिल्लाह भी पढ़ता हूँ। नाश्ते के बाद वुज़ू करके अस्र की नमाज़ अदा करता हूँ। इसके बाद अपने दोस्तों के साथ मग़रिब तक खेलता हूँ।

मग़रिब की नमाज़ के बाद पढ़ने के लिए बैठ जाता हूँ। पढ़ाए गए पाठ को दोहराता हूँ। स्कूल में दिए होम वर्क (गृह-कार्य) को पूरा करता हूँ और अगले दिन पढ़ाए जानेवाले पाठ को पढ़ लेता हूँ। तब तक इशा की अज़ान हो जाती है। खाना खाकर नमाज़ पढ़ता हूँ। नमाज़ पढ़कर सोने के लिए बिस्तर पर चला जाता हूँ।

यह है सुबह से शाम तक मेरा रोज़ाना का प्रोग्राम। अलबत्ता छुट्टी के दिन मैं अपने घर की सफ़ाई में घरवालों की मदद करता हूँ। अगर घर के आस-पास कोई गन्दगी हो तो उसे भी साफ़ कर देता हूँ। गन्दगी बहुत बुरी चीज़ है, इससे बीमारियाँ फैलती हैं। इसी लिए हफ़्ते में एक बार मैं अपने नाख़ुन काटता हूँ और महीने में एक बार बाल ज़रूर बनवाता हूँ।

अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो–

1. तुम सुबह से शाम तक कौन-कौन से काम करते हो?
2. ब्रश किस समय करते हो?
3. ग़ुस्ल क्यों करते हो?
4. स्कूल जाने से पहले कौन-सा काम करते हो?
5. मग़रिब की नमाज़ के बाद क्या करते हो?

लिखित

(क) ख़ाली जगहों को उचित शब्दों से भरो–

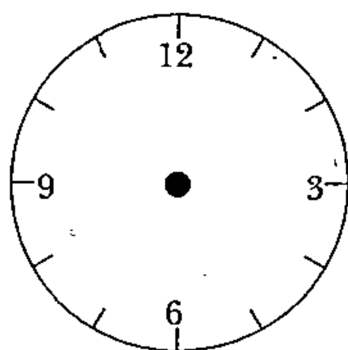
(पाक-साफ़, स्कूल, बीमारियाँ, हाथ, सफ़ाई)

1. .... आधा ईमान है! यही है अल्लाह के रसूल का फ़रमान।
2. खाने से पहले .... अच्छी तरह धो लेता हूँ।
3. ग़ुस्ल करने से आदमी .... हो जाता है।
4. .... जाने से पहले बैग को अच्छी तरह चेक कर लेता हूँ।
5. गन्दगी बहुत बुरी चीज़ है। इससे .... फैलती हैं।

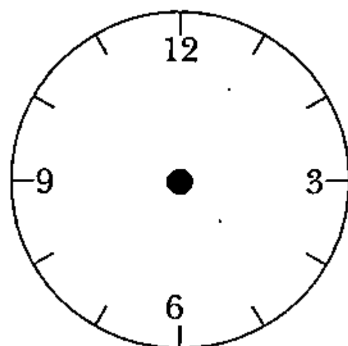
(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से सही वाक्यों के सामने (✓) और ग़लत के सामने (✗) का चिन्ह लगाओ।

1. मैं रोज़ाना स्कूल देर से पहुँचता हूँ।
2. प्यारे नबी (सल्ल०) ने मिसवाक करने की ताकीद की है।
3. व्यायाम करने से सेहत ख़राब होती है।
4. खाने से पहले पैर धो लेना चाहिए।
5. खाने के बाद ब्रश ज़रूर करना चाहिए।

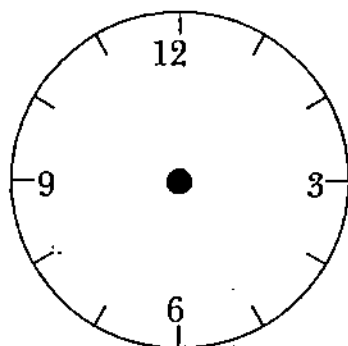
(ग) नीचे लिखे कामों को तुम जिस समय करते हो उसके अनुसार घड़ी की दोनों सूइयाँ बनाओ—



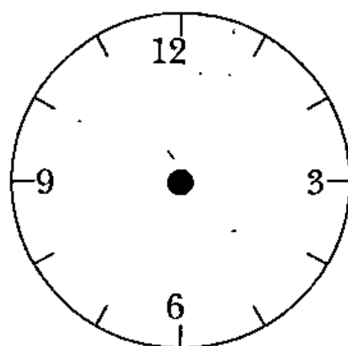
सुबह उठता हूँ।



नाश्ता करता हूँ।



खेलने जाता हूँ।



सोने के लिए बिस्तर पर चला जाता हूँ।

कुछ और काम

1. ब्रश करने का सही तरीक़ा अपने टीचर से मालूम करो।
2. हाथ धोए बिना खाना खाने से क्या-क्या नुक़सान होते हैं? अपने टीचर से मालूम करो।
3. अपने दोस्त से उसके दिन भर के प्रोग्राम मालूम करो।

हमारा भोजन

हवा और पानी के बाद हमारे लिए सबसे ज़रूरी चीज़ भोजन है। भोजन से जानदारों को ऊर्जा और ताक़त हासिल होती है, जिससे वे तरह-तरह के काम करते हैं।





हम अपने भोजन में तरह-तरह की चीज़ें खाते हैं। लेकिन इस बात का ध्यान रखते हैं कि वे चीज़ें पाक और हलाल हों। तुम सुबह के नाश्ते से लेकर रात के खाने तक जिन चीज़ों को खाते हो उनकी एक सूची तैयार करो।

नाश्ता (सुबह)	दोपहर का खाना	रात का खाना

भोजन के रूप में तुम जो कुछ भी खाते हो ज़रा उनपर ध्यान दो। ये चीज़ें कहाँ से हासिल होती हैं। चावल, रोटी, दाल, सब्ज़ी जैसी चीज़ें हमें पौधों से हासिल होती हैं। जबकि मांस, अण्डा, दूध, मक्खन वग़ैरा जानवरों से प्राप्त होता है। अब तुम अपने भोजन को इस बुनियाद पर दो ग्रुपों में बाँटो–

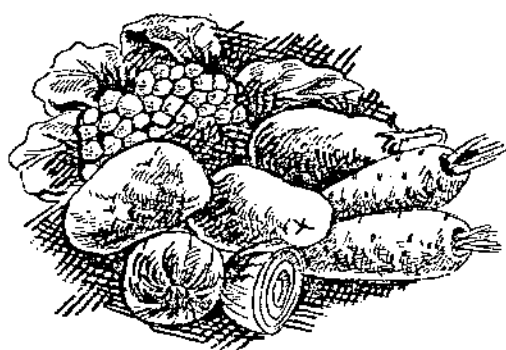
	पैधों से हासिल होनेवाली चीज़ें	जानवरों से हासिल होनेवाली चीज़ें
1		
2		
3		
4		

हमारे भोजन का एक अहम हिस्सा रोटी या चावल होता है। कुछ लोग सिर्फ़ रोटी खाना पसन्द करते हैं तो कुछ लोग चावल खाते हैं। बहुत-से लोग अपने खाने में रोटी और चावल दोनों को शामिल करते हैं। अधिकतर लोग गेहूँ

के आटे की रोटी पसन्द करते हैं। मगर कुछ लोग चावल, चना, मकई, बाजरा और ज्वार की रोटी भी खाते हैं।

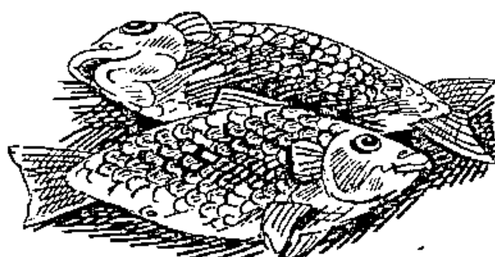
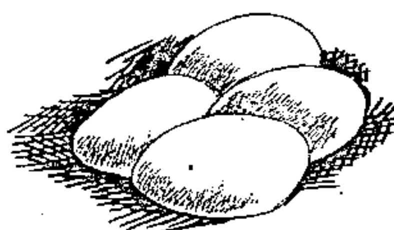
एक ही अनाज से कई तरह की चीज़ें बनाई जा सकती है। जैसे गेहूँ के आटे से रोटी के अलावा डबल रोटी, केक, टोस्ट, समोसा और पिज़्ज़ा जैसी चीज़ें बनाई जा सकती हैं। तुम चावल, चना, मकई और बाजरे से बननेवाली चीज़ों की लिस्ट बनाओ।

चावल और रोटी से हमें ताक़त मिलती है। इसी तरह घी, तेल, मक्खन, चीनी और गुड़ वग़ैरा भी ऐसी चीज़ें हैं जो हमारे शरीर को ताक़त पहुँचाती हैं।




हमारे भोजन का कुछ हिस्सा बीमारियों से लड़ने में हमारी मदद करता है। यह काम सब्ज़ियाँ और फल करते हैं। इसी लिए ताज़ा और हरी सब्ज़ियाँ ख़ूब खाना चाहिए। कुछ सब्ज़ियाँ ऐसी भी होती हैं जो कच्ची भी खाई जाती हैं। जैसे टमाटर, ख़ीरा, मूली और प्याज़ वग़ैरा। बहुत-सी सब्ज़ियों को सिर्फ़ पकाकर ही खाया जा सकता है। तुम ऐसी सब्ज़ियों की लिस्ट तैयार करो जिन्हें तुम सिर्फ़ पकाकर ही खा सकते हो।

हमारे भोजन में वे चीज़ें भी शामिल हैं जिनसे हमारा शरीर और हमारी हड्डियाँ बढ़ती हैं। अंडा, मांस, मछली और दाल इसी प्रकार के भोजन हैं।

पानी भी हमारे भोजन का एक अहम हिस्सा है। भोजन को ठीक प्रकार से पचाने के लिए ज़रूरत के मुताबिक़ पानी पीना ज़रूरी है।

खाने से सम्बन्धित कुछ ज़रूरी बातें–

1. खाना हमेशा समय पर खाना चाहिए।
2. खाना न इतना ज़्यादा खाया जाए कि अनपच हो जाए और न इतना कम खाना चाहिए कि आदमी कमज़ोर हो जाए।
3. अल्लाह का नाम लेकर खाना खाना चाहिए और जो कुछ मिले उसपर अल्लाह का शुक्र अदा भी करना चाहिए।
4. खाने-पीने की चीज़ों को हमेशा ढककर रखना चाहिए। बाज़ार की खुली हुई चीज़ों को नहीं खाना चाहिए।
5. खाना इत्मीनान के साथ अच्छी तरह चबाकर खाना चाहिए। खाने में जल्दी नहीं करनी चाहिए।
6. फलों को खाने से पहले धो लेना चाहिए। सब्ज़ियों को भी काटने से पहले अच्छी तरह धो लेना चाहिए।
7. खाने से पहले और खाने के बाद हाथों को अच्छी तरह धो लेना चाहिए।
8. खाने के बाद दाँतों को अच्छी तरह साफ़ कर लेना चाहिए। दातुन या ब्रश कर लेना ज़्यादा बेहतर है। ब्रश या दातुन करने से दाँत बीमारियों से सुरक्षित रहते हैं और उनमें कीड़े नहीं लगते।
9. खाने को बरबाद होने से बचाना चाहिए।
10. हर मौसम के फल और सब्ज़ियों को खाना चाहिए।

अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो—

1. भोजन हमारे लिए क्यों ज़रूरी है?
2. जानवरों से हमें कौन-कौन-सी खाने की चीज़ें हासिल होती हैं।
3. पौधों से हासिल होनेवाली खाने की चीज़ों के नाम लिखो।
4. शरीर को ताक़त पहुँचानेवाली खाने की चीज़ें कौन-कौन-सी हैं?
5. खाने की कौन-कौन-सी चीज़ें शरीर को बढ़ाने में मददगार होती हैं?

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो—

1. फल और सब्ज़ियाँ हमारे लिए क्यों ज़रूरी हैं?
2. वे कौन-सी सब्ज़ियाँ हैं जिन्हें हम बिना पकाए खाते हैं?
3. कौन-सी चीज़ हमारे भोजन का अहम हिस्सा है?
4. भोजन हासिल करने के दो अहम ज़रीए क्या हैं?

(ख) नीचे लिखे वाक्यों में सही के सामने (✓) और ग़लत के सामने (×) का निशान लगाओ।

1. भोजन से हमें ताक़त मिलती है।
2. फल और सब्ज़ियाँ शरीर को बढ़ाने के लिए ज़रूरी हैं।
3. हमें सिर्फ़ पाक और हलाल चीज़ें ही खानी चाहिएँ।
4. हम अपने भोजन के लिए पौधों और जानवरों पर निर्भर करते हैं।
5. फलों और सब्ज़ियों को बिना धोए ही खाना चाहिए।

कुछ और काम

1. अपने पसन्दीदा फलों का चित्र बनाओ।
2. भोजन की एक सूची बनाओ जिसमें यह लिखा हो कि नाश्ता, दोपहर के खाने और रात के खाने में आप क्या खाते हो?
3. शाकाहारी और मांसाहारी किसे कहते हैं? अपने शिक्षक से मालूम करो।

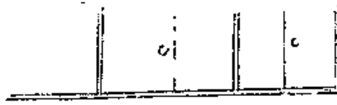
पाठ - 4

बिन पानी जग सूना

पानी जीवन के लिए बहुत ही ज़रूरी है। इसके बिना कोई भी जानदार जीवित नहीं रह सकता है। नीचे का चित्र देखकर बताओ कि पानी हमारे क्या-क्या काम आता है?





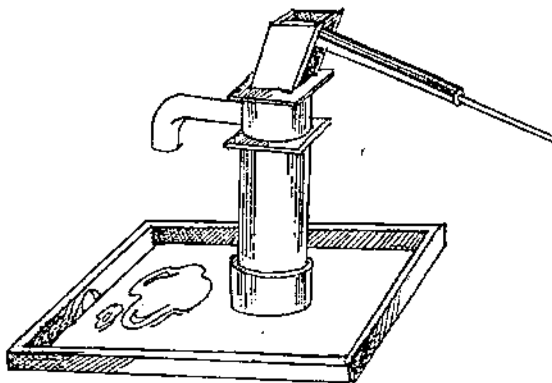


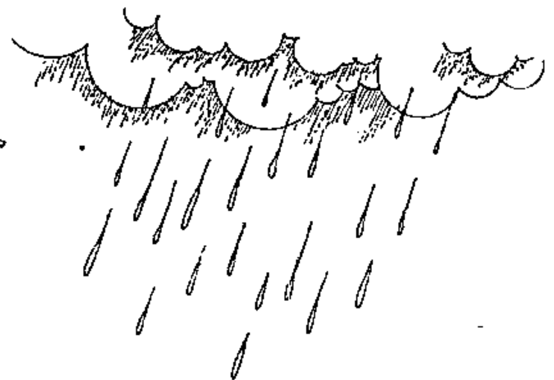


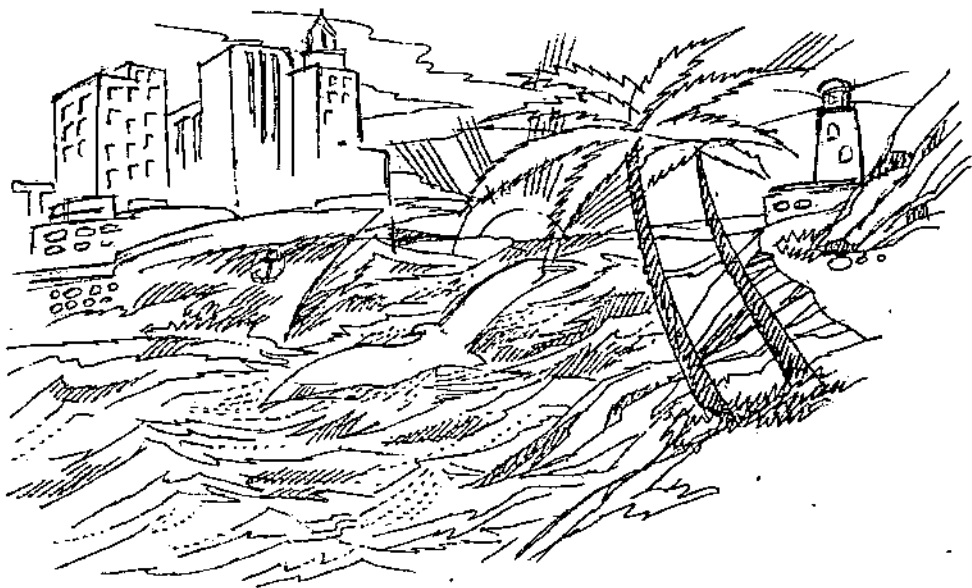


इनसानों के अलावा पानी पेड़-पौधों और जानवरों के लिए भी अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत है।

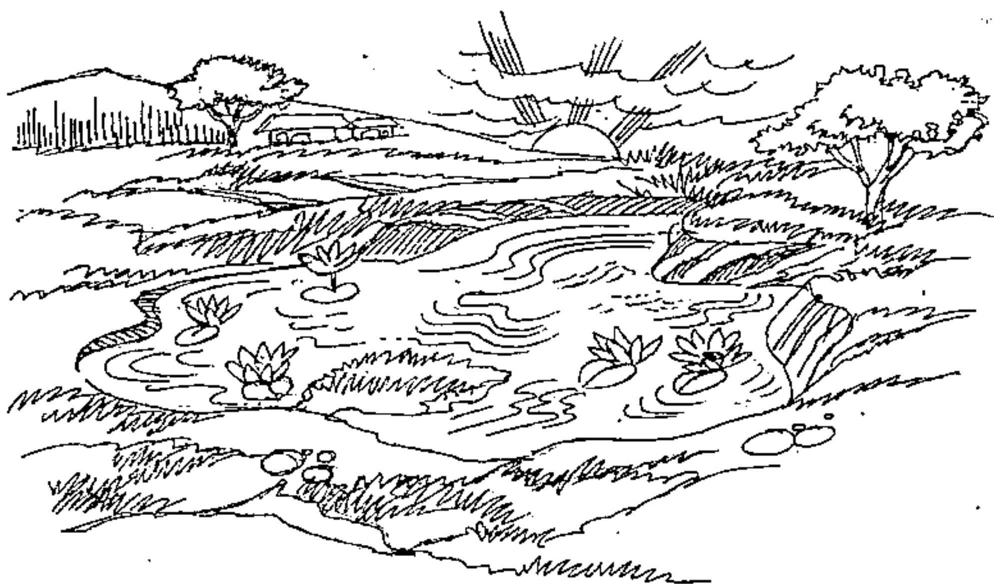
जीवन के लिए इतनी ज़रूरी चीज़ अल्लाह ने ज़मीन पर इतनी रखी है कि सभी को मिल जाती है। चित्र देखकर बताओ कि पानी किन-किन ज़रीओं से हासिल किया जाता है।





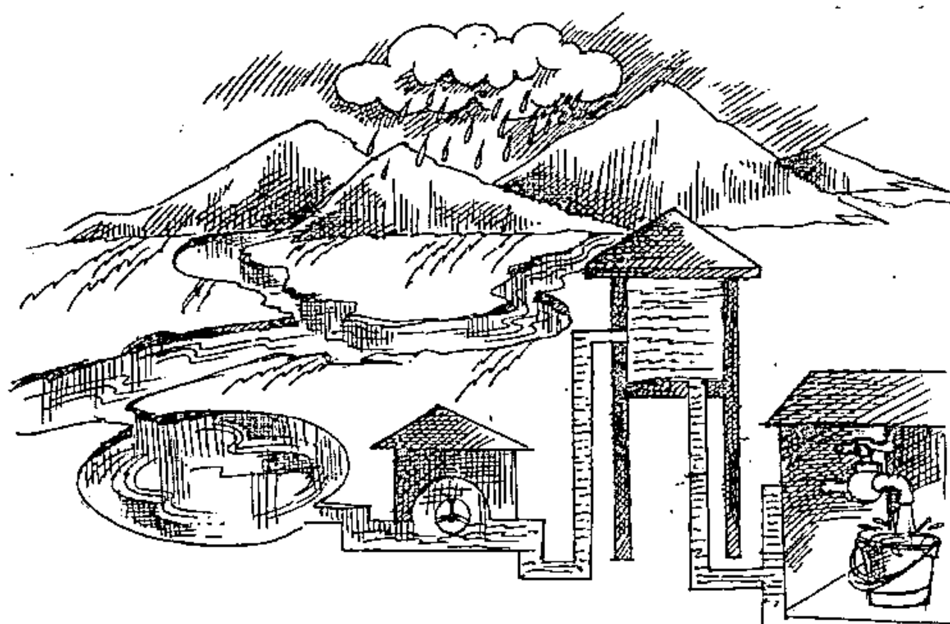


पानी का सबसे ज़्यादा संग्रह समुद्र में पाया जाता है, लेकिन समुद्र का पानी नमकीन होता है और पीने-योग्य भी नहीं होता। पीने का पानी हम हैंडपम्प, नल या कुएँ से हासिल करते हैं। क्या तुम बता सकते हो कि शहरों में आने वाला नल का पानी किस तरह आता है।



सबसे पहले नदी या झील के पानी को साफ़ किया जाता है। फिर उसमें कीटाणु-नाशक दवाइयाँ मिलाकर उसे कीटाणु-रहित बनाया जाता है। फिर उसे

टैंक में जमा किया जाता है। अगर पानी ज़मीन की सतह के नीचे से निकाला जाता है तो उसमें केवल कीटनाशक दवाएँ डालकर बड़े टैंक में इकट्ठा कर लिया जाता है। इस टैंक में जमा किए हुए पानी को पाइपों के द्वारा शहरों में सप्लाई किया जाता है।



पानी, जिसे तुम रोज़ पीते हो, क्या बता सकते हो कि उसका रंग कैसा होता है? इसकी बू (गंध) कैसी होती है? जी हाँ, पानी का न कोई रंग होता है और न कोई बू होती है। क्या पीते समय तुम कोई मज़ा महसूस करते है? पानी का कोई स्वाद भी नहीं होता है।

पीने-योग्य साफ़ पानी में न कोई रंग होता है, न गन्ध और न ही स्वाद। पानी की एक विशेषता यह भी है कि तुम इसे जिस बरतन में रखोगे वह वैसी ही शक्ल में आ जाएगा। गिलास में रखोगे तो गिलस की तरह और मग में रखोगे तो मग की तरह हो जाएगा।

पानी जानदारों के लिए बहुत ज़रूरी और क़ीमती द्रव (liquid) है। इसलिए इसका इस्तेमाल ठीक ढंग से करना चाहिए। खाना पकाने और पीने के पानी को हमेशा साफ़ बरतन में ढककर रखना चाहिए। बाल्टी से पानी निकालने के लिए साफ़ मग का इस्तेमाल करना चाहिए। घड़े से पानी निकालना हो तो लम्बे

हैंडिलवाले बर्तन से निकालना चाहिए। पानी का इस्तेमाल ज़रूरत के मुताबिक़ ही करना चाहिए। पानी को बरबाद होने से बचाना चाहिए।

अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो–

1. पानी का इस्तेमाल हम किन-किन कामों में करते हैं?
2. पीने का पानी हम कहाँ से हासिल करते हैं?
3. पानी को बेकार क्यों नहीं बहाना चाहिए?
4. पानी के न मिलने पर हमें किस तरह की परेशानी होगी?
5. एक गिलास में पानी भरा है तो पानी की शक्ल क्या होगी?

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. शहरों में आनेवाला नल का पानी किस तरह घरों तक पहुँचता है?
2. समुद्र का पानी पीने-योग्य क्यों नहीं होता?
3. पानी की किन्हीं चार विशेषताओं का वर्णन करो।
4. इनसानों के अलावा पानी और किस-किस के काम में आता है?
5. पानी का रंग कैसा होता है? पानी की बू (गंध) कैसी होती है?

(ख) दिए गए शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करो।

(शक्ल, समुद्र, पशुओं, बू, रंग, पौधों, ढक)

1. पानी को .... कर रखना चाहिए।
2. पानी का न कोई .... होता है और न कोई ....।
3. इनसानों के अलावा पानी .... और .... के लिए भी ज़रूरी है।
4. पानी सबसे ज़्यादा .... में पाया जाता है।
5. पानी को जिस बर्तन में रखा जाएगा वैसी ही .... का हो जाएगा।

(ग) सही वाक्यों के सामने (✓) और ग़लत के सामने (×) का चिन्ह लगाओ—

1. बिना गंधवाले पानी को नहीं पीना चाहिए।
2. पेड़-पौधों को पानी की ज़रूरत नहीं होती।
3. पीने के पानी को खुला रखना चाहिए।
4. पानी की कोई शक्ल नहीं होती।
5. समुद्र का पानी मीठा होता है।

कुछ और काम

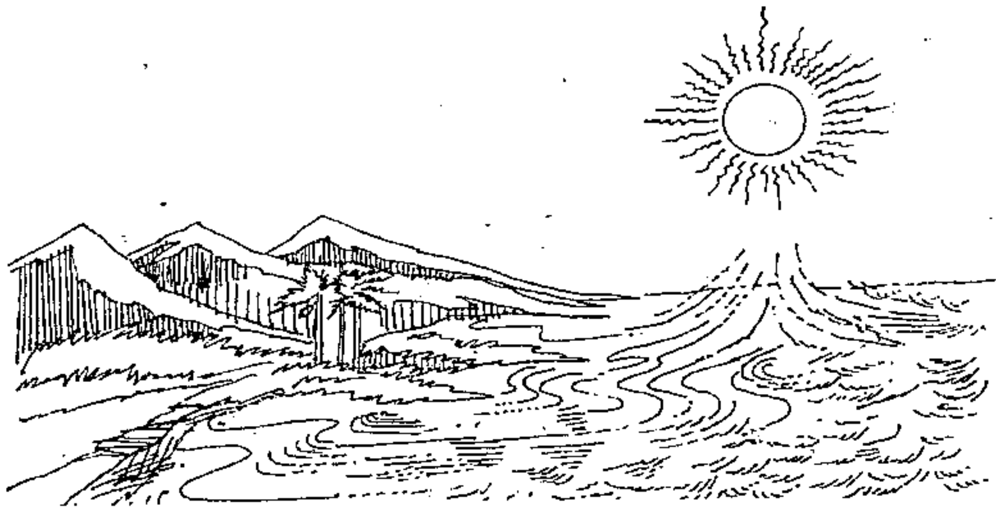
1. पानी को लोग किस-किस तरह बरबाद करते हैं? लिखो।
2. दो गिलास पानी लो। एक गिलास में 2 चम्मच चीनी डालो और दूसरे में 2 चम्मच नमक, इसे अच्छी तरह चलाओ, अब दोनों गिलास के पानी को चखो और इसका स्वाद अपनी कापी में लिखो।

पाठ - 5

पानी के रूप

क्या तुम जानते हो कि मेरा असूल नाम क्या है। मेरा असूल नाम रहमतुल्लाह है। हाँ, मगर प्यार से लोग मुझे पानी कहकर पुकारते हैं। मेरे पिता को तो तुम जानते ही होगे उनका नाम समुद्र है। सैर-सपाटे का मुझे बचपन से शौक़ है। मैं कभी चैन से नहीं बैठ सकता। चलते-फिरते रहने में मुझे बहुत मज़ा आता है। जहाँ ज़रा-सा भी ढलान मिला मैं उधर बह निकला।

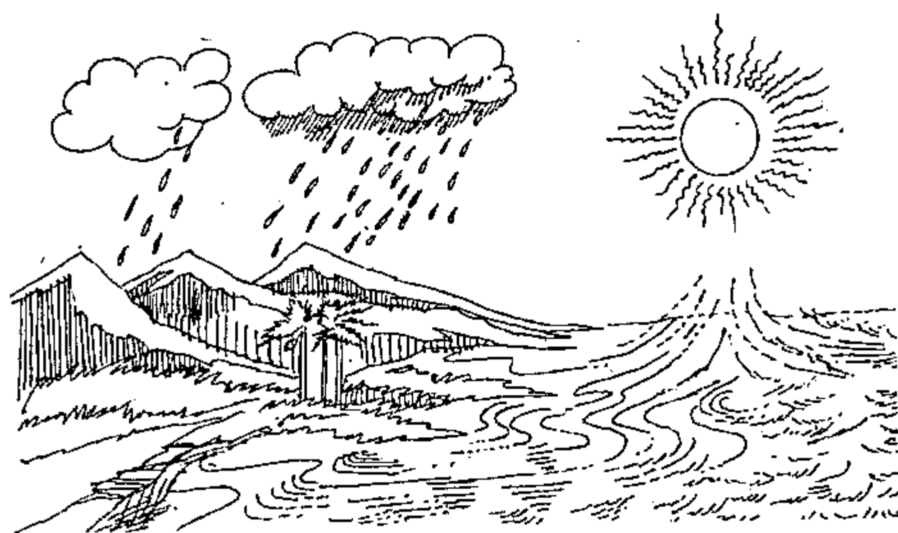
एक दिन चिड़िया की तरह हवा में उड़ने की, आसमान में सैर करने की इच्छा हुई। मैंने कई बार कोशिश भी की मगर हर बार ज़मीन ने मेरी टाँग खींच ली। तब मैंने हवा से कहा कि मुझे अपने साथ ले चलो। हवा बोली, भई! मुझे अपने साथ ले चलने में कोई आपत्ति नहीं है मगर जब तक तुम पानी के रूप में रहोगे तब तक ज़मीन तुम्हें छोड़नेवाली नहीं है। हाँ, अगर तुम अपना रूप बदलकर भाप बन जाओ तो तुम्हें अपने साथ ले जा सकती हूँ।



मुझे भी हवा में उड़ने का केवल यही एक तरीक़ा समझ में आया। मैंने भाप बनना क़बूल कर लिया। लेकिन भाप बनने के लिए मुझे सूरज से मदद लेनी पड़ी।

पानी से भाप (वाष्प) बनने की क्रिया को वाष्पीकरण करते हैं।

जब सूरज अपनी गर्मी से मुझे भाप बनाने लगा तो मेरी हालत बहुत ख़राब हो गई। मेरा पूरा शरीर खौलने लगा। हवा में उड़ने के शौक़ में मैंने यह सब कुछ सहन कर लिया। जब मैं भाप में बदल गया तो हवा अपने वादे के मुताबिक़ मुझे ले उड़ी। रास्ते में मेरी मुलाक़ात धूल और धुएँ के कणों से हुई। ऊँचाई पर पहुँचकर मुझे ठंड भी लग रही थी। मेरे जिस्म की सारी गर्मी जाती रही। मैंने धूल और धुएँ से मिलकर एक नया रूप ले लिया। इस नए रूप का नाम लोगों ने 'बादल' रखा। बादल बनकर मैं ख़ूब घूमा। गाँव, शहर, खेत, बाग़-बग़ीचे देखे। मगर जिसे देखा वही गर्मी से बेचैन और परेशान नज़र आया। मुझे उनपर रहम आ गया। मैंने दोबारा अपने असली रूप में आने का इरादा कर लिया। बादल के रूप में मेरी छोटी-छोटी बूँदे जब इकट्ठा हो गईं तो मैं दोबारा द्रव के रूप में ज़मीन पर बरस पड़ा। यहाँ मेरे कुछ हिस्से को ज़मीन पी गई और बाक़ी हिस्सा नदी-नालों से होता हुआ फिर से अपनी असल जगह समुद्र में जा गिरा। इस तरह मेरा यह सफ़र पूरा हुआ। लोग मेरे इस सफ़र को ''जल-चक्र'' के नाम से भी जानते हैं। भाप के पानी में बदलने को 'संघनन' कहते हैं।



प्यारे बच्चो! मेरी कहानी उस समय तक पूरी नहीं हो सकती जब तक तुम यह न जान लो कि मैं एक और रूप भी ले सकता हूँ। मुझे जब बहुत ज़्यादा ठंड लगती है तो मैं ठोस शक्ल में आ जाता हूँ। लोग मेरी इस ठोस शक्ल को बर्फ़ कहते हैं। इस ठोस शक्ल को पाने के लिए मुझे जब चाहते हैं रेफ़रिजिरेटर में रख देते हैं। वहाँ मुझे इतनी ठंड लगती है कि मैं ठिठुरकर पत्थर (बर्फ़) बन जाता हूँ। इस तरह मैं तीन अलग-अलग शक्ल में इनसानों के काम आता हूँ। ये शक्लें हैं– द्रव (पानी), गैस (वाष्प) और ठोस (बर्फ़)।

अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो–

1. पानी को हवा के साथ उड़ने के लिए क्या करना पड़ा?
2. पानी बादल के रूप में किस तरह आया?
3. भाप की शक्ल में आने के लिए पानी को किससे मदद लेनी पड़ी?
4. बादल किस तरह अपनी असल शक्ल में वापस आया?

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. 'जल-चक्र' किसे कहते हैं?
2. पानी की तीन अलग-अलग शक्लें कौन-कौन-सी हैं?
3. संघनन से तुम क्या समझते हो?
4. पानी ठोस रूप में किस तरह बदलता है?
5. बारिश (वर्षा) का पानी समुद्रों तक किस तरह पहुँचता है?

(ख) रिक्त स्थानों को उचित शब्दों से भरो–

(बर्फ़, ढलान, बादल, भाप, गैसीय, बर्फ़)

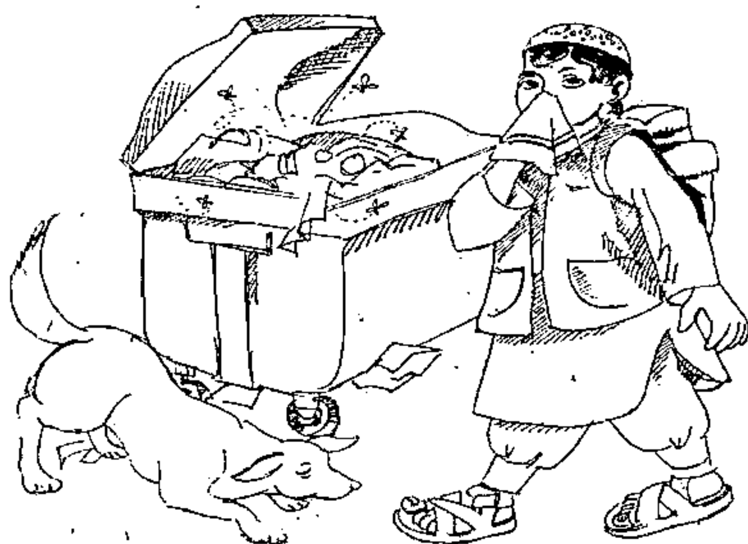
1. पानी में .... की तरफ़ बढ़ने की विशेषता है।
2. पानी की ठोस शक्ल .... कहलाती है।
3. पानी का .... रूप भाप है।
4. भाप धुएँ और धूल के साथ मिलकर जो रूप धारण करती है उसको .... कहते हैं।
5. ठंडा करने पर पानी .... में बदल जाता है।
6. पानी गर्म करने पर .... में बदल जाता है।

कुछ और काम

1. पानी के मुख्य स्रोत कौन-कौन-से हैं? अपने शिक्षक से मालूम करो।
2. जल-चक्र का चित्र बनाओ।
3. घर में अपनी अम्मी की मदद से पानी को भाप में बदलने की क्रिया को ध्यान से देखो।

माहौल को साफ़ रखिए, स्वस्थ रहिए

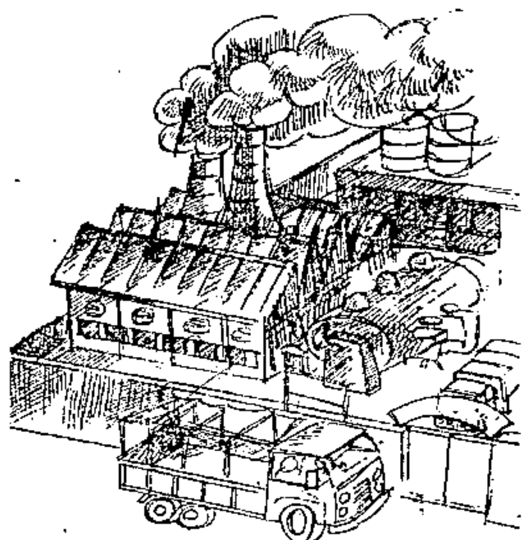
हममें से हर एक साफ़-सुथरे माहौल (वातावरण) में रहना पसन्द करता है। अगर हमारा माहौल साफ़-सुथरा होगा तो हम स्वस्थ रहेंगे। गन्दे माहौल में रहने से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। बीमार होने का डर रहता है। इसलिए ज़रूरी है कि घर को साफ़-सुथरा रखने के साथ-साथ हम अपने माहौल को भी साफ़-सुथरा रखें।



क्या तुम बता सकते हो कि माहौल किस तरह गन्दा हो जाता है? वास्तव में कुछ लोग ख़ुद अपनी लापरवाही से अपने माहौल को गन्दा कर देते हैं। जब लोग कूड़ा-करकट जहाँ-तहाँ, गलियों में, सड़कों पर या नालियों में डाल देते हैं तो मच्छरों और मक्खियों को पनपने का मौक़ा मिलता है। ये मच्छर और मक्खी बीमारियों को फैलाने में मददगार होते हैं। इसके अलावा खुली जगहों पर कूड़ा-करकट डालने से

हवा भी गन्दी (दूषित) हो जाती है। साँस लेने के लिए हमें साफ़ हवा की ज़रूरत होती है। गन्दी हवा में साँस लेने से स्वास्थ्य को हानि पहुँचती है।

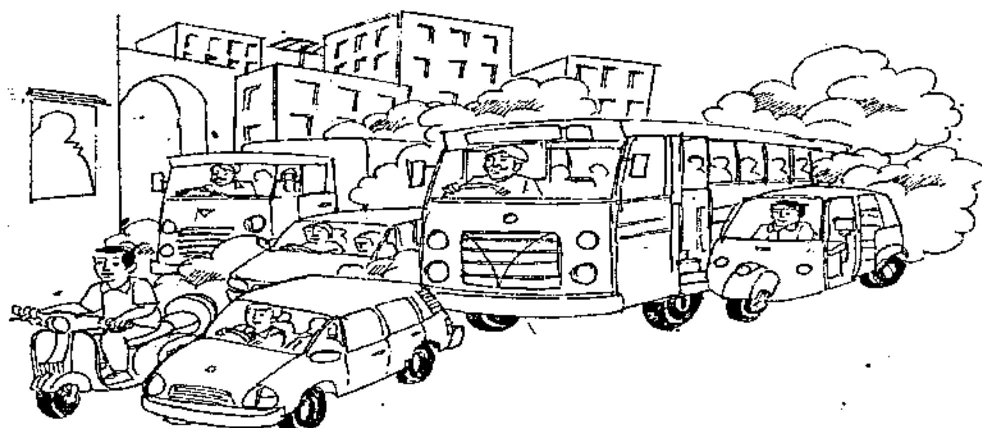
इसलिए यह ज़रूरी है कि कूड़ा-करकट ठीक जगह पर डाला जाए और कूड़ा रखने के लिए हमेशा ढक्कनवाले बर्तन का प्रयोग किया जाए। गली में, सड़क पर या नालियों में कूड़ा न डाला जाए। इसी तरह प्लास्टिक की थैलियों में कूड़ा-करकट भरकर नालियों में नहीं डालना चाहिए। इससे नालियाँ बन्द हो जाती हैं। जहाँ-तहाँ थूकने और पेशाब करने से भी बचना चाहिए।



हवा के दूषित और गन्दा होने के दो और कारण भी हैं—

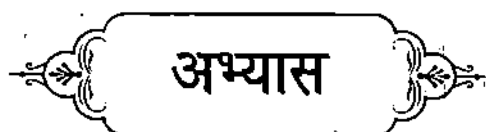
(1) कारख़ानों की चिमनियों से निकलनेवाला धुआँ

कारख़ानों से निकलनेवाला धुआँ भी माहौल को दूषित करता है। चिमनी से निकलनेवाले धुएँ से आस-पास की हवा दूषित हो जाती है। ऐसी हवा में साँस लेने से सेहत पर बुरा असर पड़ता है। हवा को दूषित होने से बचाने के लिए कारख़ानों को आबादी से दूर स्थापित करना चाहिए। कारख़ानों में ऐसी मशीनें इस्तेमाल की जाएँ जिनसे ज़हरीला धुआँ कम से कम निकले।



(२) गाड़ियों के इंजन से निकलनेवाला धुआँ

गाड़ियों के इंजन से निकलनेवाले धुएँ से बड़े शहरों के माहौल पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे बचने के लिए गाड़ियों में ऐसे इंजनोंका प्रयोग करना चाहिए जिनसे कम-से-कम धुआँ निकले। साथ ही साथ ऐसे ईंधन का भी प्रयोग करें जिससे ज़हरीला धुआँ न निकले। हवा की गन्दगी (वायुप्रदूषण) को कम करने के लिए बड़ी संख्या में पेड़-पौधे भी लगाने चाहिएँ।



मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो—

1. माहौल को साफ़-सुथरा रखना क्यों ज़रूरी है?
2. गन्दे माहौल के क्या-क्या नुक़सान हैं?
3. माहौल गन्दा किस तरह हो जाता है?
4. गन्दी हवा में साँस क्यों नहीं लेनी चाहिए?
5. प्लास्टिक की थैलियों को नालियों में फेंकने से क्या होता है?

लिखित

(क) निम्नलिखित वाक्यों में सही के सामने (✓) और ग़लत के सामने (✗) का चिन्ह लगाओ—

1. गन्दे माहौल में रहने से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। (   )
2. कूड़ा-क़रकट गली में या सड़क पर डालना चाहिए। (   )
3. मच्छर और मक्खी बीमारियों को रोकने में मददगार होते हैं। (   )
4. कारख़ानों से निकलनेवाला धुआँ माहौल को गन्दा करता है। (   )
5. सवारियों के इंजन से निकलनेवाला धुआँ माहौल को साफ़ करता है। (   )

6. हवा की गन्दगी कम करने के लिए बड़ी संख्या में पेड़-पौधे भी लगाने चाहिएँ। ( )

(ख) निम्नलिखित में सही वाक्य के सामने सही (✓) का चिन्ह लगाओ–

1. ज़गह-जगह थूकना चाहिए।

कभी-कभी/सदैव/कभी नहीं

2. कूड़ा-करकट फेंकना चाहिए।

सड़क पर/गली में/कूड़ेदान में

3. कूड़ेदान होना चाहिए।

ढक्कनवाला/बिना ढक्कनवाला

4. घरों में मच्छरों और मक्खियों को पनपने का अवसर

देना चाहिए/नहीं देना चाहिए

कुछ और काम

अपने आस-पास के वातावरण को साफ़-सुथरा रखने में लोगों की मदद करो।

पाठ - 7

घर और परिवार

घर हम सब लोगों के लिए ज़रूरी है। घर हमें सर्दी-गर्मी और बरसात की परेशानियों से बचाता है। घर कई प्रकार के बनाए जाते हैं। घर अगर मिट्टी, लकड़ी और घास-फूस आदि से बना हो तो उसे कच्चा घर कहते हैं और अगर ईंट, बालू, छड़ और सीमेंट आदि से बना हो तो उसे पक्का घर कहते हैं। घर कच्चा बना हो या पक्का, वह हवादार होना चाहिए और घर में रौशनी आए इसका भी ध्यान रखा जाना चाहिए।



शहरों के घर आम तौर से पक्के होते हैं, जबकि गाँव के घर कच्चे और पक्के दोनों तरह के होते हैं। कच्चे घरों को पानी और आग से बहुत नुक़सान पहुँचता है।

चिड़ियों का घर उनका घोंसला होता है। लेकिन चिड़ियाँ अपना घर रहने के लिए नहीं बल्कि अण्डे देने के लिए बनाती हैं।

अधिकतर चिड़ियाँ अपना घोंसला पेड़ पर बनाती हैं। कुछ चिड़ियाँ ऐसी भी हैं जो घरों में भी अपना घोंसला बना लेती हैं। चिड़ियाँ अपना घोंसला बनाने के लिए घास-फूँस और तिनकों का इस्तेमाल करती हैं। छछूँदर, घूस, चूहे और कुछ दूसरे जानवर बिल बनाकर रहते हैं।

हम अपने घर में अपने माता-पिता और भाई-बहन के साथ रहते हैं। हम सब भाई-बहन मिल-जुलकर रहते हैं। सब मिलकर घर को साफ़-सुथरा रखते हैं। घर की हर चीज़ को उसकी ठीक जगह पर रखते हैं। किसी भी सामान को इधर-उधर नहीं फेंक देते। कूड़े-करकट को ढक्कनदार कूड़ेदान में रखते हैं। हमारे घर के कई हिस्से हैं। सोने के लिए दो कमरे हैं। कमरों के सामने दालान है। दालान के एक तरफ़ रसोईघर है तो दूसरी तरफ़ ग़ुस्लख़ाने से मिला हुआ शौचालय है।

घर के सारे काम हम लोग मिल-जुलकर करते हैं। मैं अपनी किताबों और खेलने के सामान की देखभाल ख़ुद करता हूँ। चीज़ों को इस्तेमाल करने के बाद उनको सही जगह पर रख देता हूँ। मेरी बाजी खाना बनाने में अम्मी की मदद करती हैं।

हमारे घर में कभी-कभी दादाजी और दादीजी भी आती हैं। हमारे ये बुज़ुर्ग जब आते हैं तो हमारे लिए खाने-पीने और पहनने-ओढ़ने की अच्छी-अच्छी चीज़ें लाते हैं। हमारे अब्बा जी दादा को अब्बू और दादी को अम्मी कहते हैं। दादी कहती हैं कि तुम्हारे पिता तुम्हारी ही तरह छोटे थे। मैंने इनको गोद में खिलाया है। दादी अच्छी-अच्छी कहानियाँ भी सुनाती हैं।

गर्मी की छुट्टियों में हम लोग कभी-कभी नानाजी के घर भी जाते हैं। नानाजी मेरी अम्मी के अब्बू हैं और नानीजी मेरी अम्मी की माँ हैं। मामा और मुमानी भी हमारे नानाजी के यहाँ रहते हैं। मामा हमारी अम्मी के भाई और नानाजी के बेटे हैं। अम्मी की बहन को हम ख़ाला जान कहते हैं, अब्बू के भाई को चाचा जान और बहन को फूफी जान कहते हैं।

अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो–

1. हमारे लिए घर क्यों ज़रूरी है?
2. पक्का घर बनाने में किन-किन चीज़ों का इस्तेमाल होता है?
3. घर किस तरह का होना चाहिए?
4. कच्चा घर बनाने में कौन-कौन-सी चीज़ें इस्तेमाल की जाती हैं?

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. शहर और गाँव के घरों में क्या-अन्तर होता है?
2. चिड़ियाँ घोंसला किस लिए बनाती हैं?
3. तुम्हारे साथ तुम्हारे घर में और कौन-कौन लोग रहते हैं?
4. कौन-कौन से जानवर बिल बनाकर रहते हैं?
5. किस तरह के घरों को पानी और आग से ज़्यादा नुक़सान पहुँचता है?
6. चिड़ियाँ घोंसला बनाने में किन-किन चीज़ों का इस्तेमाल करती हैं?

(ख) तीर (→) का चिन्ह बनाकर जोड़ मिलाओ :

घर	मिट्टी, लकड़ी और घास-फूँस से बनाया जाता है।
अम्मी के अब्बू	बिल बनाकर रहते हैं।
कच्चा घर	हवादार होना चाहिए।
चूहे और ख़रगोश	को नाना कहते हैं।
चिड़ियाँ अपना-घोंसला	आम तौर से पक्के होते हैं।
शहरों के घर	अधिकतर पेड़ों पर बनाती हैं।

(ग) रिक्त स्थानों को भरो–

1. अब्बू की बहन को .... कहते हैं।
2. अम्मी के अब्बू को .... कहते हैं।
3. अब्बू के अब्बू को .... कहते हैं।
4. अम्मी की बहन को .... कहते हैं।
5. अब्बू के भाई को .... और अम्मी के भाई को .... कहते हैं।

कुछ और काम

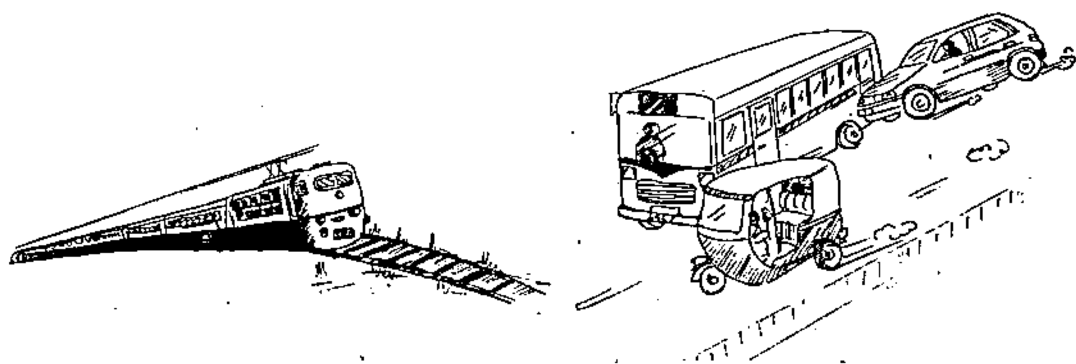
1. अपने घर का चित्र बनाओ और उसे रंगो।
2. तुम्हारे स्कूल और घर का दरवाज़ा किस तरह का है, मालूम करो।
3. चिड़ियों के अलग-अलग तरह के घोंसलों का चित्र काटकर अपनी कॉपी पर चिपकाओ।

हमारी सवारियाँ

मेरा स्कूल घर से बहुत ज़्यादा दूर नहीं है। इसलिए अधिकतर मैं पैदल ही स्कूल चला जाता हूँ। कभी-कभी अब्बू अपने स्कूटर से मुझे स्कूल पहुँचा देते हैं। मेरे स्कूल में बहुत-से बच्चे साइकिल से आते हैं। जिन बच्चों का घर दूर है उन्हें लाने और घर छोड़ने के लिए स्कूल की बस है। मेरे अब्बू का ऑफ़िस भी घर से काफ़ी दूर है। इसलिए वे स्कूटर से ऑफ़िस जाते हैं।

मेरे कुछ रिश्तेदारों का घर तो मेरे ही शहर में है। अगर मुझे उनसे मिलने जाना होता है तो ऑटो-रिक्शा, टैक्सी या बस से ज़ाता हूँ।

मेरे कुछ रिश्तेदार दूसरे शहरों में भी रहते हैं। अगर कभी वहाँ जाना हो तो मैं बस या रेलगाड़ी से जाता हूँ। रेलगाड़ी लोहे की पटरी पर दौड़ती है। लोहे की पटरी को अंग्रेज़ी में 'रेल' कहते हैं। इसलिए इसका नाम रेलगाड़ी पड़ा।

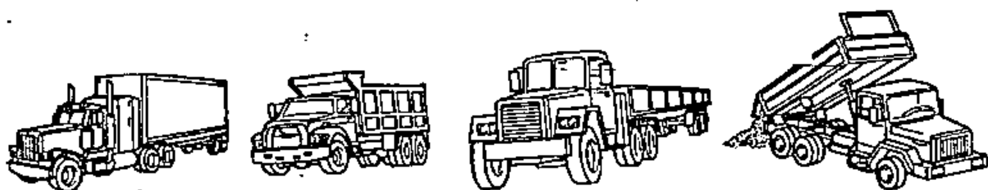


दादाजी ने बताया कि वे हज करने के लिए हवाई जहाज़ से गए थे। मैंने भी हवाई जहाज़ को हवा में उड़ते देखा है। एक ही मिनट में उड़कर कहाँ से

कहाँ चला जाता है। दादाजी ने यह भी बताया कि पहले लोग पानी के जहाज़ पर सवार होकर हज करने जाते थे।

तरह-तरह की सवारियाँ हैं जिन्हें लोग आने-जाने के लिए प्रयोग करते हैं। छोटे शहरों और गाँवों में लोग इन सवारियों के अलावा ताँगे और बैलगाड़ी का भी प्रयोग करते हैं।

इन तरह-तरह की सवारियों को न केवल आने-जाने के लिए प्रयोग किया जाता है बल्कि उनके द्वारा सामान भी एक जगह से दूसरी जगह तक पहुँचाया जाता है। निम्न सवारियाँ ख़ास तौर से समान ढोने के काम आती हैं।



अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो—

1. ऐसी दो सवारियों के नाम बताओ जिनमें छः पहिए होते हैं।
2. ऐसी दो सवारियों के नाम बताओ जिनसे सामान ढोया जाता है।
3. दूर की यात्रा करने के लिए तुम कौन-सी सवारी का प्रयोग करते हो?
4. कम दूरी तक जाने के लिए कौन-सी सवारी का प्रयोग करते हैं?

लिखित

(क) निम्नलिखित सवारियों के नाम बताओ—

1. तुम्हारे अब्बू ऑफ़िस जाने के लिए प्रयोग करते हैं ....
2. हज करनेवाले हज को जाते हैं ....
3. चिड़ियाघर या पिकनिक जाने के लिए प्रयोग करते हो ....

(ख) जोड़े बनाओ–

हेलीकॉप्टर	पानी में
नाव	पटरी पर
रेलगाड़ी	सड़क पर
बस	हवा में

(ग) तुम अपनी पसंद की सवारी के बारे में पाँच वाक्य लिखो।

(घ) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से रिक्त स्थानों को उचित शब्दों से भरो–

1. ताँगा बैलगाड़ी से .... चलता है। (तेज़/धीरे)
2. हवाई जहाज़ पानी के जहाज़ से .... चलता है। (तेज़/धीरे)
3. रेलगाड़ी बस से .... चलती है। (तेज़/धीरे)

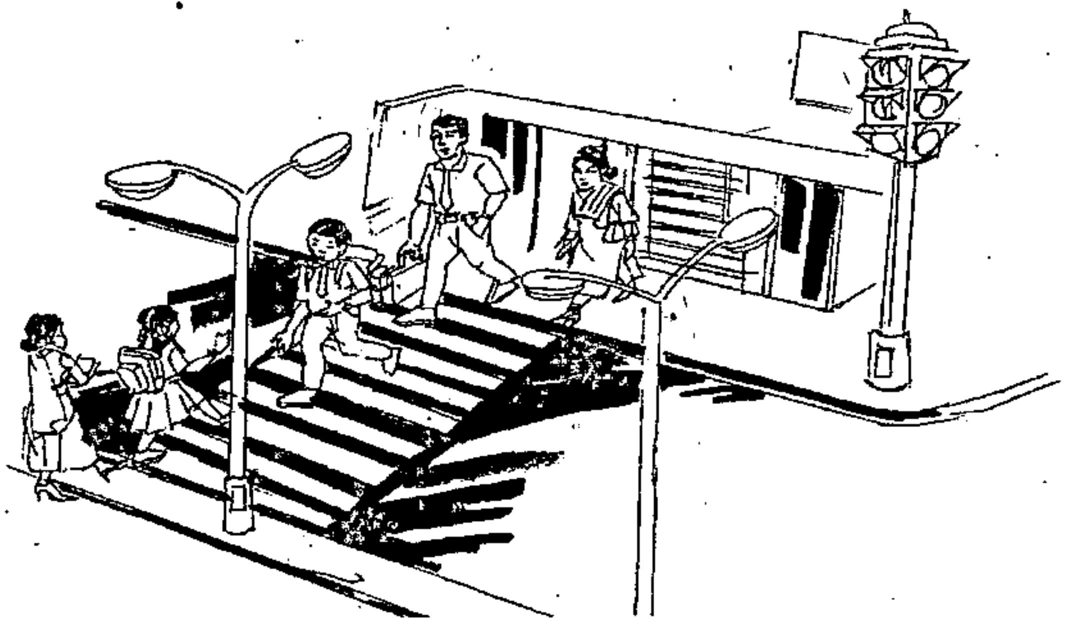
सड़क के नियम

सड़क के नियमों का पालन करके हम दुर्घटनाओं से बच सकते हैं। इसकी पाबन्दी सब लोगों को ज़रूर करनी चाहिए। ऐसा न करने से कभी भी कोई दुर्घटना हो सकती है। दुर्घटनाएँ अधिकतर जल्दी और लापरवाही के कारण होती हैं। जल्दी के कारण लोग सड़क के नियमों का पालन नहीं कर पाते हैं।

सड़क पर चलते समय हमें नीचे लिखे नियमों का ध्यान रखना चाहिए :

(1) बीच सड़क पर नहीं चलना चाहिए, बल्कि फ़ुटपाथ (पैदल चलने के लिए बनाए गए रास्ते) पर चलना चाहिए। अगर फ़ुटपाथ न हो तो सड़क की बाईं तरफ़ चलना चाहिए।

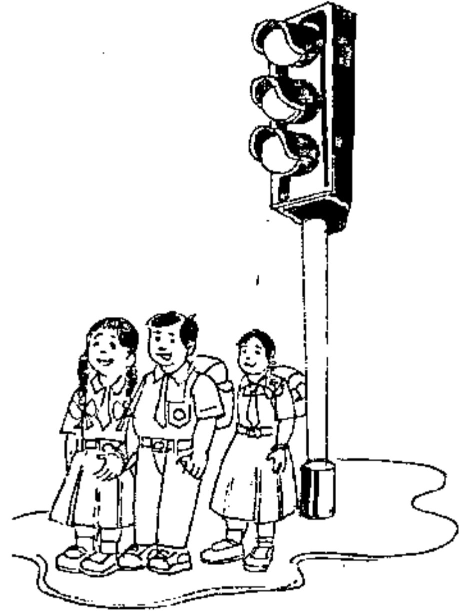
(2) सड़क पार करने के लिए हमेशा ज़ेब्रा क्रासिंग का प्रयोग करना चाहिए।



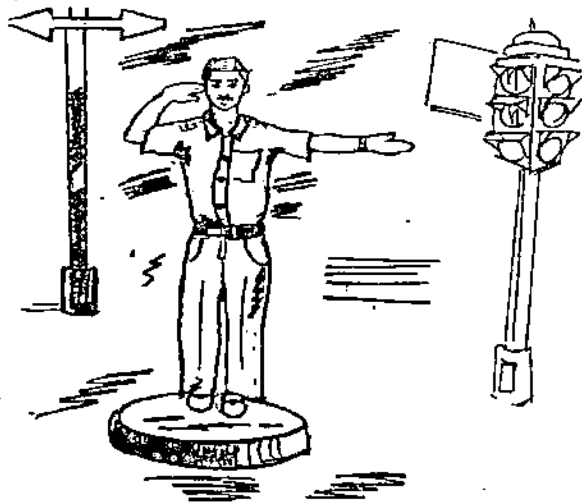
बड़े शहरों में पैदल चलनेवालों की आसानी के लिए सड़क के सिरे पर सफ़ेद पट्टियों के निशान बना दिए जाते हैं। वह ज़ेब्रा क्रासिंग कहलाता है।

(3) अगर सड़क पर ज़ेब्रा क्रासिंग न हो तो सड़क पार करने से पहले दाईं तरफ़ फिर बाईं तरफ़ और फिर से दाईं तरफ़ देख लेना चाहिए।

(4) बड़े शहरों में आम तौर से चौराहों पर सिगनल की बत्ती लगी होती है। हरी लाल और पीले रंग की बत्तियाँ थोड़ी-थोड़ी देरी पर जलती और बुझती रहती हैं। सड़क पार करने से पहले सिगनल की बत्ती ज़रूर देख लेनी चाहिए। पैदल चलनेवालों के लिए हरी बत्ती हो जाने पर ही सड़क पार करनी चाहिए। लाल बत्ती होने पर पैदल चलनेवालों और गाड़ियों को रुक जाना चाहिए।



(5) ट्रैफ़िक पुलिस बीच चौराहों पर खड़े होकर जो इशारे देती है, उसका पालन ज़रूर करना चाहिए।



(6) सड़क पार करने के लिए कई जगहों पर सड़क के नीचे से रास्ते बने होते हैं। (ख़ास तौर से ऐसी जगहों पर जहाँ लगातार गाड़ियाँ आती-जाती रहती हैं।) सड़क पार करने के लिए उसी रास्ते का प्रयोग करना चाहिए।

(7) सड़क पर न तो पतंग उड़ाना चाहिए और न कोई दूसरा खेल खेलना चाहिए। कुछ बच्चे सड़क पर फ़ुटबॉल या क्रिकेट खेलते हैं। ऐसा करने से दुर्घटना हो सकती है।

(8) चलती हुई सवारी से न तो बाहर झाँकना चाहिए और न ही शरीर का कोई दूसरा अंग बाहर निकालना चाहिए।

(9) चलती हुई सवारी पर न तो चढ़ना चाहिए और न ही उतरना चाहिए।

(10) बस पर सवार होते समय अगर आदमी अधिक हों तो लाइन में खड़े होकर चढ़ना चाहिए। पहले सवार होने के लिए धक्कापेली नहीं करनी चाहिए।

(11) साइकिल पर एक से अधिक आदमियों को सवार नहीं होना चाहिए। स्कूटर, मोटर साईकल चलानेवाले और पीछे बैठनेवाले दोनों को हेलमेट का प्रयोग करना चाहिए। हेलमेट वह टोपी है जो दुर्घटना की स्थिति में सिर को सुरक्षित रखती है।

अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो-

1. सड़क के नियमों का पालन न करने पर क्या होगा?
2. दुर्घटनाएँ किस वजह से होती हैं?
3. सड़क पर पैदल चलनेवालों को किस तरफ़ चलना चाहिए?
4. सड़क पार करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

5. चौराहे पर ट्रैफ़िक पुलिस क्यों खड़ी रहती है?

लिखित

(क) ठीक जोड़े बनाओ :

1. सड़क पार करने के लिए	का पालन करना चाहिए।
2. पैदल चलनेवालों को	हेलमेट प्रयोग करना चाहिए।
3. मोटर साइकिल और स्कूटर चलानेवालों को	फ़ुटपाथ पर चलना चाहिए।
4. ट्रैफ़िक पुलिस के द्वारा दिए जानेवाले इशारे	ज़ेब्रा क्रासिंग का प्रयोग करना चाहिए।
5. सड़क पर खेलने से	लाइन में खड़े होना चाहिए।
6. बस पर सवार होते समय	दुर्घटना हो सकती है।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में सही के सामने (✓) और ग़लत के सामने (×) का चिन्ह लगाओ :

1. चलती हुई सवारी से बाहर झाँकना चाहिए।
2. साइकिल पर दो से कम आदमियों को सवार नहीं होना चाहिए।
3. सड़क के नियमों का सदा पालन करना चाहिए।
4. सड़क पार करने से पहले ट्रैफ़िक लाइट की तरफ़ ज़रूर देख लेना चाहिए।
5. सड़क पर पतंग उड़ाना चाहिए।

कुछ और काम

1. ट्रैफ़िक लाइट का रंगीन चित्र बनाओ।
2. सड़क के नियमों को समझकर अच्छी तरह याद कर लो।

पाठ - 10

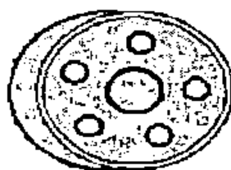
पहिये की कहानी

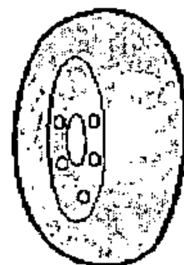
पहिया इनसान की बहुत बड़ी खोज है। पहिये के कारण यात्रा बहुत आसान हो गई है। महीनों की यात्रा दिनों और घंटों में की जाने लगी है। इतनी ज़रूरी चीज़ की खोज किस तरह हुई? आओ पता करें।

बहुत दिनों की बात है, जब पहिये की खोज नहीं हुई थी तब लोग एक जगह से दूसरी जगह अपना सामान अपने सरों पर लेकर जाते थे। जब लोगों ने जानवरों को पालतू बनाया तो उनसे बोझ ढोने का काम लेने लगे। लेकिन जानवर बस एक हद तक ही बोझ उठा सकते थे।

इसके बाद भारी बोझ को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए इनसान ने लकड़ी के कुन्दों का प्रयोग किया। लकड़ी के कुन्दों के लुढ़कने से इनपर रखा सामान भी आगे बढ़ता जाता था। इस काम के लिए दो से अधिक लकड़ी के कुन्दे प्रयोग किये जाते थे।

बाद में इसी लकड़ी के कुन्दे को चक्की के पाट के समान गोल-गोल काटकर तैयार किया गया, यह पहला पहिया था। फिर इस तरह के दो पहियों के बीच में छेद करके इसे लोहे की छड़ से जोड़ दिया गया। बैलगाड़ी और जानवरों से खींची जानेवाली दूसरी गाड़ियों में इन पहियों का प्रयोग किया गया।



क़हते हैं कि इस प्रकार के सबसे पहले पहिये का प्रयोग इराक़वालों ने आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व किया था।

इसके बाद लकड़ी के पहियों पर लोहे की हाल चढ़ाई जाने लगी जिससे पहिया और मज़बूत हो गया। धीरे-धीरे इसमें सुधार किया गया और लोहे के रिम के चारों तरफ़ रबर का टायर लगाया गया। इससे गड़ियों की गति में और तेज़ी आ गई और पहिया ज़मीन में धँसता भी नहीं था।

आज पहियों का प्रयोग न केवल गाड़ियों में होता है बल्कि विभिन्न प्रकार की मशीनों में भी छोटे-बड़े पहियों का प्रयोग होता है। शायद तुम्हें यह जानकर हैरत होगी कि पहिये के बिना हवाई जहाज़ भी नहीं उड़ सकता है।

क्या तुम जानते हो कि बर्फ़ पर चलनेवाली गाड़ी स्लेज में पहिया नहीं होता है।

अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो—

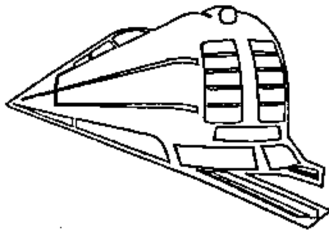
1. पहिये की खोज से पहले इनसान एक जगह से दूसरी जगह किस तरह जाता था।
2. ऐसी किसी सवारी का नाम बताओ जिसमें तीन पहिये प्रयोग किए जाते हैं?
3. पहिये किन-किन चीज़ों के बने होते हैं?
4. सबसे पहला पहिया कैसा था? इसका प्रयोग किस सवारी में किया गया?
5. क्या तुम किसी ऐसी सवारी का नाम बता सकते हो जिसमें पहिये का प्रयोग नहीं किया जाता है।

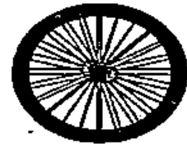
लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

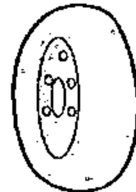
1. ऐसी तीन मशीनों के नाम बताओ जिसमें पहिया प्रयोग किया जाता है।
2. सबसे पहले पहिये का प्रयोग कब और कहाँ हुआ?
3. ऐसी दो सवारियों के नाम बताओ जिसमें लकड़ी के पहिये प्रयोग किए जाते हैं।
4. पहिया इनसान की बहुत बड़ी खोज है, कैसे?
5. रिम के चारों तरफ़ रबर का टायर लगने से पहिये में क्या अन्तर पड़ा?

(ख) सवारियों को उनके पहियों से मिलाओ।



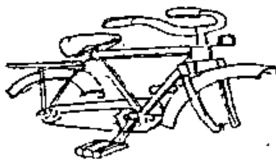


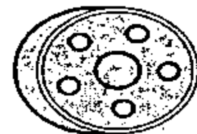












कुछ और काम

1. अपने आस-पास की ऐसी चीज़ों की लिस्ट बनाओ जिसमें पहियों का प्रयोग होता है।
2. विभिन्न प्रकार के पहियों के चित्र काटकर अपनी कापी में चिपकाओ।

सन्देश पहुँचाने के साधन

हमारे बहुत-से सेवकों में से एक डाकिया भी है। डाकिया हमारी बहुत ही महत्त्वपूर्ण सेवा करता है। यह हमारे रिश्तेदारों और दोस्तों के सन्देश हम तक और हमारा सन्देश उन लोगों तक पहुँचाता है। हालाँकि आज टेलीफ़ोन, मोबाइल फ़ोन और इन्टरनेट का प्रयोग बढ़ने से डाक का प्रयोग पहले से बहुत कम हो गया है लेकिन अब भी डाक, संचार का एक बड़ा साधन है।

क्या तुम बता सकते हो कि पत्र के द्वारा सन्देश एक जगह से दूसरी जगह तक किस तरह पहुँचते हैं? आओ पता करें कि यह काम किस तरह होता है।

डाकघर में पोस्टकार्ड, अन्तरदेशीय पत्र और लिफ़ाफ़ा निर्धारित मूल्यों पर मिलते हैं। पोस्टकार्ड और अन्तरदेशीय पत्र में पत्र का विषय उसी पर लिखते हैं। अन्तरदेशीय पत्र के अन्दर कोई दूसरा क़ाग़ज़ रखना मना है। अगर अधिक बातें लिखनी हों तो एक अलग कागज़ पर लिखकर डाकघर का या ख़ुद के लिफ़ाफ़े का प्रयोग किया जा सकता है। अगर लिफ़ाफ़ा डाकघर का न हो तो पत्र के वज़न के अनुसार उसपर टिकिट लगाया जाता है।

पत्र लिखने के बाद पता लिखते हैं। पता उस व्यक्ति का लिखते हैं जिसको पत्र भेजना होता है। नीचे में बाईं तरफ़ भेजने वाले का पता भी लिखते हैं ताकि अगर किसी कारण जिसको पत्र भेजा गया उसको वह न मिले तो पत्र वापस भेजनेवाले के पास आ जाए। पते के साथ पिन कोड लिखने से पत्र जल्दी पहुँच जाता है। इसके बाद पत्र को डाक के डब्बे में डाल देते हैं। पत्र डालने का यह डब्बा लाल या हरे रंग का होता है।



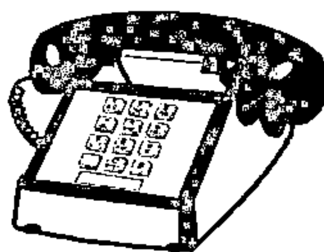
इस डब्बे से डाकिया निर्धारित समय पर पत्रों को निकालता है और उन्हें डाकघर ले जाता है जहाँ अलग-अलग जगहों के पत्र छाँटे जाते हैं। फिर बस, ट्रेन या हवाई जहाज़ से वे थैले अलग-अलग जगहों पर भेज दिए जाते हैं।

वहाँ पत्र फिर से छाँटे जाते हैं और हर डाकिये को अपने-अपने क्षेत्र के पत्र मिल जाते हैं। जिन्हें वह पत्रों पर लिखे हुए पतों तक पहुँचा देता है। अगर भारत से बाहर किसी दूसरे देश को पत्र भेजना हो तो एरोग्राम से भेजा जाता है। विदेशों की डाक हवाई जहाज़ से भेजी जाती है। इसलिए ख़र्च अधिक आता है।

पत्र के द्वारा सन्देश पहुँचाने में दो-तीन दिन लग जाते हैं। अगर तुरन्त सन्देश भेजना हो तो टेलीग्राम से भेजा जाता है। संक्षिप्त लिखित सन्देश टेलीग्राम के द्वारा पहुँचाया जाता है। लिखित सन्देश पहुँचाने का एक माध्यम फ़ैक्स भी है। एक स्थान पर फ़ैक्स मशीन में लिखित सन्देश डाल दिया जाता है। वह तुरन्त दूसरे स्थान पर लगे फ़ैक्स मशीन के द्वारा प्राप्त हो जाता है। आज-कल तो ई-मेल के द्वारा बड़े-बड़े सन्देश यहाँ तक कि पूरी-पूरी किताबें एक जगह से दूसरी जगह भेजी जा सकती हैं। ई-मेल को आजकल सन्देश पहुँचाने का सबसे तेज़ और आसान साधन माना जाता है। इसमें पैसे भी बहुत कम ख़र्च होते हैं।

मौखिक और लिखित सन्देश पहुँचाने के लिए टेलिफ़ोन और मोबाइल का प्रयोग भी किया जाता है। इनके द्वारा सन्देश पहुँचाने के साथ-साथ हम उसी





सन्देश प्राप्त भी कर सक़ते हैं।

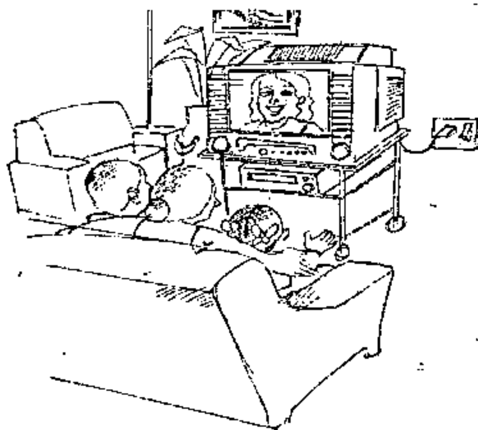
फ़ैक्स, टेलीफ़ोन और ई-मेल सन्देश पहुँचाने के ऐसे साधन हैं कि आप इधर सन्देश-डालो और उधर प्राप्त कर लो।

कुछ समय पहले तक टेलीफ़ोन केवल घरों और दफ़्तरों में ही होते थे। लेकिन अब इनको घर बैठे या चलते-फिरते और यात्रा में भी प्रयोग किया जाता है। इनको मोबाइल फ़ोन कहा जाता है। इन दिनों मोबाइल फ़ोन का प्रयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

एक साथ बहुत-से लोगों तक जब सन्देश पहुँचाना हो तो यह काम टेलीफ़ोन के द्वारा नहीं किया जा सकता। इसके लिए रेडियो, टेलीवीज़न और इन्टरनेट का प्रयोग किया जाता है।

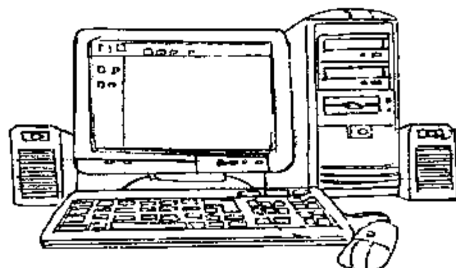


रेडियो, टेलीवीज़न और इन्टरनेट के द्वारा हम दुनिया भर के समाचार घर बैठे सुन-सकते हैं और देख भी सकते हैं। रेडियो और टेलीवीज़न बहुत-से ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजक प्रोग्राम भी प्रसारित करते हैं।



समाचार पत्र के द्वारा भी एक साथ बहुत सारे लोगों तक सन्देश पहुँचाए जाते हैं? बहुत-से समाचार पत्र सप्ताह में एक दिन बच्चों के लिए कार्टून और कहानियाँ भी छापते हैं।

क्या तुम जानते हो कि संचार का आधुनिकतम साधन इन्टरनेट है?



अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो—

1. हम अपनी बात दूसरों तक किस प्रकार पहुँचाते हैं?
2. डाकघर का प्रयोग अब पहले से कम क्यों हो गया है?
3. डाक के माध्यम से सन्देश एक स्थान से दूसरे स्थान तक किस प्रकार पहुँचते हैं?
4. पत्र अगर विदेश भेजना हो तो किस माध्यस से भेजा जाता है?
5. रेडियो से तुम कौन-कौन सी चीज़ें सुनते हो?

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो—

1. सन्देश पहुँचाने के तीन ऐसे माध्यम बताओ जिनसे एक साथ बहुत-से लोगों तक संदेश पहुँचाया जाता है।
2. सन्देश पहुँचाने के तीन ऐसे माध्यम बताओ जिनसे व्यक्तिगत सन्देश पहुँचाए जा सकते हों।

3. मौखिक सन्देश पहुँचाने का तीव्रतम साधन कौन-सा है?

4. सन्देश पहुँचाने का ऐसा माध्यम बताओ जिसमें सबसे अधिक समय लगता है।

(ख) रिक्त स्थानों को उचित शब्दों से भरो–

(डाकघर, फ़ैक्स, अन्तरदेशीय पत्र, पचास पैसे)

1. आजकल पोस्टकार्ड की क़ीमत .... है।

2. ....पत्र में कागज़ का कोई टुकड़ा और लिखा हुआ पुर्ज़ा डालना मना है।

3. व्यक्तिगत लिखित सन्देश पहुँचाने का तीव्रतम माध्यम .... है।

4. पत्रों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने का प्रबन्ध .... के द्वारा सम्पन्न होता है।

कुछ और काम

एक पोस्टकार्ड पर अपना पता लिखकर डिब्बे में डाल दो। देखो यह कितने दिनों में तुम्हारे पास वापस पहुँचता है।

पाठ - 12

पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा

सारे जीव पृथ्वी पर रहते हैं। इस प्रकार पृथ्वी सारे जीवों का घर है। पृथ्वी का अधिकतर भाग पानी से ढका हुआ है। थल का भाग पानी के अनुपात में बहुत कम है। पृथ्वी के लगभग तीन चौथाई भाग पर पानी और एक चौथाई भाग थल है। इस थल भाग पर मनुष्य भी है, जंगल और पहाड़ भी हैं और रेगिस्तान भी।

पृथ्वी पर जीवित रहने के लिए अल्लाह तआला ने सभी चीज़ें उपलब्ध की हैं, जैसे— हवा, पानी और भोजन। बल्कि पृथ्वी को तो अल्लाह ने हवा के ग़िलाफ़ से घेर रखा है।



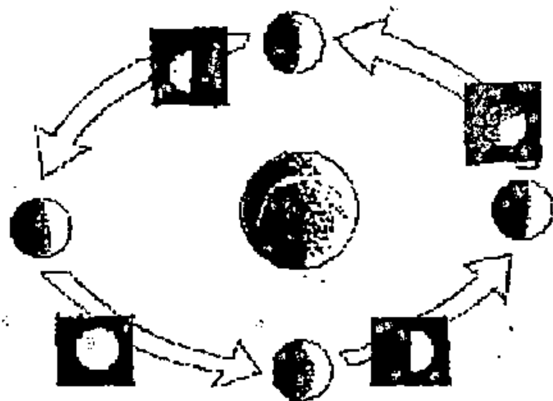
दिन के समय आकाश की ओर नज़र करने पर तुम्हें क्या दिखाई देता है? क्या कभी ऐसा भी होता है कि सूर्य कई दिनों तक दिखाई नहीं देता है? कभी-कभी सर्दी और बरसात के मौसम में कई दिनों तक सूर्य नहीं दिखाई देता

है। बरसात में तो अगर सूर्य न भी दिखाई दे तो परेशानी नहीं होती। लेकिन जाड़े के दिनों में ऐसा हो तो सर्दी का प्रभाव बढ़ जाता है। क्योंकि सूर्य से हमें प्रकाश के साथ-साथ गर्मी भी मिलती है। इसी लिए जाड़े में हम धूप में बैठना पसन्द करते हैं। क्या तुमने अनुभव किया है कि सूर्य के प्रकाश में गर्मी दोपहर के समय सबसे अधिक होती है? ऐसा क्यों? सूर्य का प्रकाश जानवरों और पेड़ पौधों के लिए भी उतना ही आवश्यक है जितना मनुष्यों के लिए। सूर्य भी पृथ्वी की तरह गोल है। लेकिन पृथ्वी की तुलना में बहुत बड़ा है। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि सूर्य में इस प्रकार की पाँच लाख पृथ्वियाँ समा सकती हैं। यह बात तुम्हें इसलिए भी हैरत की लगेगी कि सूर्य देखने में एक फ़ुटबाल से बड़ा नहीं लगता है। वास्तव में जो वस्तु जितनी अधिक दूर होती है वह उतनी ही छोटी दिखाई देती है। सूर्य हमसे लगभग 15 करोड़ किलोमीटर दूर है। यही कारण है कि सूर्य पृथ्वी से इतना अधिक बड़ा होने के बाद भी इतना छोटा दिखाई देता है।

रात के समय आसमान पर तुम्हें क्या-क्या चीज़ें दिखाई देती हैं? ख़ास तौर से उस समय जब आकाश पर बादल न छाए हों। ऐसी हालत में आकाश पर चाँद और सितारों को आसानी से देखा जा सकता है। चाँद भी पृथ्वी और सूर्य की तरह गोल है मगर सूर्य की तरह इसका प्रकाश गर्म नहीं बल्कि ठण्डा होता है। इस्लामी कैलेंडर का आधार चाँद है। नया चाँद पतला और खजूर की टहनी की तरह टेढ़ा होता है। धीरे-धीरे इसकी गोलाई बढ़ती जाती है।



चन्द्रमा के रूप में होनेवाले बदलाव को ग़ौर से देखो। बताओ कि कितने दिनों में चाँद पूरा गोल हो जाता है? तुम्हें मालूम होगा कि चाँद चौदह दिनों में पूरा गोल हो जाता है। फिर वह धीरे-धीरे घटना शुरू कर देता है। यहाँ तक कि वह दो दिनों तक बिल्कुल दिखाई नहीं देता है।



आकाश में चन्द्रमा के अतिरिक्त बहुत-से सितारे भी हैं। इन सितारों में कुछ अधिक चमकीले होते हैं और कुछ कम। ये सितारे देखने में चन्द्रमा से छोटे लगते हैं। परन्तु वास्तव में ये तारे चाँद से बहुत बड़े हैं, बल्कि इनमें से कुछ तो सूर्य से भी बहुत अधिक बड़े हैं। सूर्य भी एक सितारा ही है, परन्तु वह दूसरे सितारों की तुलना में पृथ्वी से निकट है इसलिए दूसरे सितारों की तुलना में बड़ा दिखाई देता है।

तुमने ध्यान दिया होगा कि कुछ सितारे सदैव एक साथ रहते हैं और एक ख़ास शक्ल (रूप) बनाते हैं। क्या तुम सितारों के इस समूह का नाम बता सकते हो? इसके सम्बन्ध में विस्तार से अगली कक्षा में पढ़ोगे।

अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो—

1. हमारे रहने के लिए पृथ्वी किस प्रकार उचित स्थान है?

2. पृथ्वी की आकृति किस प्रकार की है?

3. पृथ्वी पर जल का भाग थल से कितना अधिक है?

4. सूर्य से हमें क्या-क्या मिलता है?

5. सूर्य हमें एक फुटबॉल की तरह छोटा क्यों दिखाई देता है?

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो—

1. पृथ्वी से सूर्य की दूरी कितने किलोमीटर है?
2. चन्द्रमा और सूर्य के प्रकाश में क्या अन्तर है?
3. नया चन्द्रमा कितने दिनों में पूरा गोल हो जाता है?
4. पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा में कौन सबसे छोटा है और कौन सबसे बड़ा है?

(ख) कोष्ठक में से उचित उत्तर चुनकर वाक्य पूरा करो—

1. इस्लामी कैलेन्डर का आधार .... है। (चाँद/सूर्य/सितारे)
2. सूर्य के प्रकाश में सबसे अधिक गर्मी .... होती है। (दोपहर के समय/संध्या के समय/प्रातःकाल)
3. पृथ्वी के तीन चौथाई भाग पर .... है। (जल/थल/दलदल)
4. रात के समय आकाश पर .... दिखाई देता है। (सूर्य/चन्द्रमा/बादल)
5. जो वस्तु जितनी अधिक दूर हो वह उतनी ही अधिक .... दिखाई देती है। (बड़ी/छोटी/अच्छी)

कुछ और काम

1. सूर्य और चन्द्रमा का चित्र बनाओ।
2. चाँद के महीनों के नाम मालूम करो।
3. अपने किसी निकट के शहर जाकर प्लैनेटोरियम (ताराघर) का भ्रमण करो।

हमारे वस्त्र और मौसम

तुम यह तो जानते ही हो कि एक वर्ष में बारह महीने होते हैं। हमारे देश में पूरे वर्ष एक ही प्रकार का मौसम नहीं रहता, बल्कि बदलता रहता है। कभी सर्दी पड़ती है, कभी गर्मी और कभी बरसात होती है। कभी बसन्त और कभी पतझड़ का मौसम होता है। क्या तुम बता सकते हो कि किन-किन महीनों में कौन-कौन-से मौसम होते हैं? नीचे लिखे मौसमों के सामने इनके महीनों के नमा लिखो—

मौसम	महीनों के नाम
सर्दी	
गर्मी	
बरसात	
पतझड़	
बसन्त	

हमारा देश बहुत बड़ा है। इसलिए हर जगह एक ही तरह का मौसम नहीं रहता है। दिसम्बर और जनवरी के महीनों में उत्तरी भारत (दिल्ली, पंजाब, हिमाचल, उत्तरांचल, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और बिहार इत्यादि) में जब कड़ाके की ठण्ड पड़ती है तो मुम्बई और कोलकाता में हल्की सर्दी पड़ती है और मद्रास का मौसम गर्म रहता है। इसी प्रकार जब मई और जून के महीनों में उत्तर भारत में सख़्त गर्मी पड़ती है तो कोलकाता और मुम्बई में हल्की गर्मी पड़ती है लेकिन शिमला और

श्रीनगर का मौसम ठण्डा रहता है। पहाड़ों पर बसे शहरों का मौसम साल भर ठण्डा रहता है। सर्दी के मौसम में कभी-कभी तो वहाँ ओले भी पड़ते हैं। समुद्र के आस-पास के क्षेत्रों में न अधिक ठण्ड पड़ती है और न अधिक गर्मी।







वस्त्र मनुष्यों के लिए अल्लाह तआला का विशेष उपहार है जिससे दूसरे जीव वंचित हैं। वस्त्र का एक प्रमुख काम शरीर को ठण्ड और गर्मी से बचाना है। इसी कारण हम सर्दी और गर्मी में अलग-अलग तरह के कपड़े पहनते हैं। सर्दी के दिनों में ऊनी और गहरे रंग के कपड़े पहनते हैं तो गर्मी के दिनों में सूती और हल्के रंग के कपड़े पहनना पसन्द करते हैं।

अलग-अलग क्षेत्रों के वस्त्र भी अलग-अलग होते हैं। दक्षिण भारत के लोग शर्ट-लुंगी या शर्ट-पैंट पहनते हैं। जबकि उत्तरी भारत के लोग शर्ट के साथ लुंगी पहनना पसन्द नहीं करते हैं, बल्कि शर्ट के साथ पैंट पहनते हैं या कुर्ता-पाजामा पहनते हैं। इसी प्रकार बंगाल की औरतों का वस्त्र पंजाब की औरतों से भिन्न होता है। बंगाल की औरतें साड़ी और ब्लाउज़ पहनती हैं जबकि पंजाब की औरतें शलवार और 'जम्पर' पहनती हैं। राजस्थान की औरतें घाघरा और चोली पहनती हैं और मर्द पगड़ी बाँधना पसन्द करते हैं।



आम शहरी लिबास



राजस्थानी



तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश

हिन्दुओं का वस्त्र मुसलमानों से थोड़ा अलग होता है। हिन्दू कुर्ता और धोती पहनना पसन्द करते हैं जबकि मुसलमान कुर्ता और पाजामा पहनना पसन्द करते हैं। सिख लोग पगड़ी बाँधते हैं।

विभिन्नि राज्यों के निवासियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक आने-जाने की जो सुविधाएँ हैं उनके कारण लोग एक-दूसरे का वस्त्र भी अपनाते जा रहे हैं। पैंट-शर्ट और कुर्ता-पाजामा हमारे देश में आम तौर से सभी लोग पहन लेते हैं।

कामों की दृष्टि से भी लोगों का वस्त्र एक-दूसरे से भिन्न होता है। जैसे पुलिस, डॉक्टर, डाकिया और चौकीदार का अपना अलग-अलग लिबास (वर्दी) होता है। स्कूलों में भी छात्रों के लिए एक यूनिफ़ार्म निर्धारित कर दी जाती है। तुम्हारी यूनिफ़ार्म किस तरह की है? अपनी कॉपी में लिखो।

अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो–

1. सूती और हल्के रंग के वस्त्र किस मौसम में पहने जाते हैं?
2. हम वस्त्र क्यों पहनते हैं?
3. तुम्हारे यहाँ कौन-कौन से महीने सर्दी के हैं और किन-किन महीनों में गर्मी पड़ती है?
4. पहाड़ों पर बसे शहरों और समुद्र के आस-पास के शहरों के मौसम में क्या अन्तर होता है?
5. अलग-अलग क्षेत्रों के वस्त्रों में क्या अन्तर पाया जाता है?

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर लिखो–

1. सर्दी और गर्मी के वस्त्रों में क्या अन्तर होता है?

2. पंजाब, बंगाल और राजस्थान एकी औरतों के वस्त्रों में क्या अन्तर होता है?
3. सिखों के वस्त्र में क्या विशेष चीज़ सम्मिलित होती है?
4. पुरुषों और स्त्रियों के वस्त्र में क्या अन्तर होता है?
5. जनवरी और मई के मौसम में क्या अन्तर होता है?

(ख) रिक्त स्थानों को उचित शब्दों से भरें–

1. सर्दियों में हम...........वस्त्र प्रयोग करते हैं।
2. .... में न अधिक गर्मी पड़ती है और न अधिक सर्दी।
3. दिसम्बर और जनवरी के महीनों में उत्तरी भारत में तेज़ .... पड़ती है।
4. जुलाई और अगस्त के महीनों में .... का मौसम रहता है।
5. दक्षिण भारत के लोग शर्ट के साथ .... पहनते हैं।

कुछ और काम

1. पुरुषों और स्त्रियों के एक-एक वस्त्र का चित्र बनाओ।
2. तुम्हारे क्षेत्र में गर्मी और सर्दी के मौसम में कौन-कौन से फल पाए जाते हैं?
3. पुरुषों और स्त्रियों के विभिन्न वस्त्रों के चित्र काटकर अपनी कॉपी में चिपकाओं।